भारतीय
मुसलमानों के
हिन्दू पूर्वज
[मुसलमान कैसे बने]
—पुरुषोत्तम

भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज
(मुसलमान कैसे बने)

इस्लाम में धर्मान्तरण के मुख्य साधन थे मृत्यु भय, परिवार को गुलाम बनाए जाने का भय, आर्थिक लोभ (पारितोषिक, पेन्शन, लूट का माल) धर्मान्तरित होने वालों के पैतृक धर्म में प्रचलित अन्धविश्वास और अन्त में इस्लाम के प्रचारकों द्वारा किया गया प्रभावशाली प्रचार – (जाफर मक्की द्वारा 19 दिसम्बर, 1421 को लिखे गए एक पत्र से ।

– इण्डिया आफिस हस्तलेख संख्या 1545

पुरुषोत्तम

भूमिका

इस तथ्य को सभी स्वीकार करते हैं कि लगभग 95 प्रतिशत भारतीय मुलसमानों के पूर्वज हिन्दू थे । वह स्वधर्म को छोड़कर कैसे मुसलमान हो गए । इस पर तीव्र विवाद है । अधिकांश हिन्दू मानते हैं कि उनको तलवार की नोक पर मुसलमान बनाया गया अर्थात् वे स्वेच्छा से मुसलमान नहीं बने । मुसलमान इसका प्रतिवाद करते हैं । उनका कहना है कि इस्लाम का तो अर्थ ही शांति का धर्म है । बलाता धर्म परिवर्तन की अनुमति नहीं है । यदि किसी ने ऐसा किया अथवा करता है तो यह इस्लाम की आत्मा के विरुद्ध निंदनीय कृत्य है । अधिकांश हिन्दू मुसलमान इस कारण बने कि उन्हें दम घुटाऊ धर्म की तुलना में समानता संदेश लेकर आने वाला इस्लाम उत्तम लगा ।

वास्तविकता क्या है । यही इस छोटी सी पुस्तिका का विषय है । हमने अधिकतर मुस्लिम इतिहासकारों और मुस्लिम विद्वानों के उद्धरण देकर निष्पक्ष भाव से पता लगाने की चेष्टा की है कि इन परस्पर विपरीत दावों में कितनी सत्यता है ।

– **पुरुषोत्तम**

प्राकथ्थन

भारत की राजनीति मुस्लिम साम्प्रदायिकता के जहर से ओतप्रोत दीख रही है । भारतीय मूल के मुसलमान भी इससे कम भ्रमित नहीं हैं । भारतीय मुसलमानों के पूर्वज इस्लाम धर्म स्वीकार करने के पूर्व हिन्दू ही थे । इनके पुरखे हिन्दू धर्म में अगाध निष्टा रखते थे । इनके रगों में हिन्दू संस्कृति का ही रक्त प्रवाहित है । यह आवश्यक है कि भारतवासी यह जानें कि भारतीय मुसलमानों के पूर्वज जो हिन्दू थे वे किस परिस्थिति में मुसलमान हुए, तभी उनके मुसलमान होने के कारण का उन्हें पता चल सकेगा और वर्तमान में उन्हें भारत और भारतीयता के सम्बन्ध में निर्णय लेने में सहूलियत होगी ।

लेखक ने भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज नामक ग्रन्थ में ऐतिहासिक सत्य के आधार पर यह दिखाने का प्रयास किया है कि भारतीय मूल के मुसलमान विचार या जीवन दर्शन से प्रभावित होकर मुसलमान नहीं बने वरन् बलात उनके पूर्वजों को इस्लाम धर्म कबूल कराया गया है । किसा प्रकार विधर्मी मुसलमानों ने भारतीय मुसलमानों की माताओं का यौन शोषण कर बलात्कारी रूप में उन्हें हिन्दू धर्म छोड़ने पर विवश किया, और उन्हें इस्लाम धर्म कबूल कराया ।

वस्तुतः इतिहास के तथ्यों के आलोक में धार्मिक अंधविश्वास के कारण से वे आज अपने पूर्वजों को भूल चुके हैं । इस ग्रन्थ के अध्ययन से उन्हें अनुभव होगा कि वे भी हिन्दू समाज के ही अंग हैं । भारतीय मुसलमानों के समक्ष यह बहुत बड़ा प्रश्न है । इस ग्रन्थ से उन्हें अपने पूर्वजों की जानकारी मिलेगी । एक ओर उन्हें अनन्त काल का गौरवमय इतिहास मिलेगा और दूसरी ओर चार पाँच सौ साल की बर्बरता का इतिहास ।

पुस्तक में यद्यपि संक्षेप में ही लिखा गया है परन्तु सभी विदेशी मुस्लिम शासक इस्लामीकरण को राजधर्म मानते हुए भारत व भारतवासियों पर अत्याचार करते रहे । जिन्होंने अत्याचार का सामना किया उन पर अनेक प्रकार के प्रशासनिक दबाव और समाज से बहिष्कार कर उन्हें घृणित कार्य करने के लिए विवश किया ।

हमारा विश्वास है यह पुस्तक प्रारम्भिक दृष्टि से बहुत ही उपयोगी है । इस संदर्भ में और भी विशिष्ट शोध की आवश्यकता है । इस दिशा में सच्चे इतिहास को प्रस्तुत करने के लिए इतिहासकार आगे आऐंगे । विषय इतना गंभीर है कि लघु में इसका सरल विवेचन संभव नही । इसके लिए वृहद कार्य करने की आवश्यकता है । यह एक अच्छी कृति है । पठन मनन करने पर भ्रमित दृष्टिकोण में परिवर्तन संभव है, कुंठाएं और भ्रातियां दूर होंगी । संशयों का निराकरण होगा और एक सम्यक भातीय समाज को इससे बल मिलेगाा ।

शुभकामना सहित

अशोक सिंहल

कार्याध्यक्ष

विश्व हिन्दू परिषद

1. कितना सच कितना झूठ

इस्लाम भारत में कैसे फैला, शांतिपूर्वक अथवा तलवार के बल पर । जैसाकि हम आगे विस्तार से बतावेंगे कि इस्लाम का विश्व में (और भारत में भी) विस्तार दोनों प्रकार ही हुआ है । उसके शांति पूर्वक फैलने के प्रमाण दक्षिणी पूर्वी एशिया के , वे देश हैं जहाँ अब मुसलमान पर्याप्त और कहीं कहीं बाहुल्य संख्या में है। , जैसे इंडोनेशिया, मलाया इत्यादि । वहाँ मुस्लिम सेनाएँ कभी नहीं गयीं । वह वृहत्तर भारत के अंग थे । भारत के उपनिवेश थे । उनका धर्म बौद्ध और हिन्दू था । किन्तु इस तथ्य से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि इस्लाम निःसंदेह तलवार के बल पर भी फैला । यह स्वाभाविक भी है क्योंकि इस्लाम में गैर मुसलमानों का इस्लाम में धर्मपरिवर्तन करने से अधिक दूसरा कोई भी पुण्य कार्य नहीं है । इस कार्य में लगे लोगों द्वारा युद्ध में बलिदान हो जाने से अधिक प्रशंसनीय और स्वर्ग के द्वार खोलने का अन्य कोई दूसरा साधन नहीं है ।

इस्लाम का अत्यावश्यक मिशन पूरे विश्व को इस्लाम में दीक्षित करना है – कुरान, हदीस, हिदाया और सिरातुन्नबी, जो इस्लाम के चार बुनियादी ग्रंथ हैं, मुसलमानों को इसके आदेश देते है। इसलिए मुसलमानों के` मन में पृथ्वी पर कब्जा करने में कोई संशय नहीं रहा । हिदाया स्पष्ट रूप से काफिरों पर आक्रमण करने की अनुमति देता है भले ही उनकी ओर से कोई उत्तेजनात्मक कार्यवाही न भी की गयी हो । इस्लाम प्रचार प्रसार के धार्मिक कर्त्तव्य को लेकर तुर्की ने भारत पर आक्रमण में कोई अनैतिकता नहीं देखी । उनकी दृष्टि में भारत में बिना हिंदुओं को पराजित और सम्पत्ति से वंचित किए, इस्लाम का प्रसार संभव नही था । इसलिए इस्लाम के प्रसार का अर्थ हो गया, '' **युद्ध और (हिदुंओं पर) विजय ''11(1)**

वास्तव में अंतर दृष्टिकोण का है । यह संभव है कि एक कार्य को हिन्दू जोर जबरदस्ती समझते हों और मुसलमान उसे स्वेच्छा समझते हो

अथवा उसे दयाजनित कृत्य समझते हों । पहले का उदाहरण मोपला विद्रोह के समय मुसलमान मोपलाओं द्वारा मालाबार में 20000 हिन्दुओ के बलात् धर्मान्तरण पर मौलाना हसरत मोहानी द्वारा कांग्रेस की विषय समिति में की गयी, वह विख्यात टिप्पणी है जिसने गाँधी इत्यादि कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं की जबान पर ताले लगा दिए थे । उन्होंने का था :– '' (मालाबार) दारुल हर्ब (शत्रु देश) हो गया था । मुस्लिम विद्रोहियों को शक (केवल शक) था कि हिन्दू उनके शत्रु अंग्रेजों से मिले हुए हैं । ऐसी दशा में यदि हिन्दुओं ने मृत्युदंड से बचने के लिए इस्लाम को स्वीकार कर लिया तो यह बलात् धर्मान्तरयण कहाँ हुआ । यह धर्म परिवर्तन तो स्वेच्छा से ही माना जाएगा । (1 1 क़)

दूसरे दृष्टिकोण का उदाहरण, अब्दुल रहमान अज्जम अपनी पुस्तक '' द एटरनल मैसेज ऑफ मौहम्मद '' में प्रस्तुत करते हैं । उनका कहना है '' जब मुसलमान मूर्ति पूजकों और बहुदेवतावादियों के विरुद्ध युद्ध करते हैं तो वह भी इस्लाम के मानव भ्रातृत्ववाद क महत्वपूर्ण सिद्धांत के अनुकूल ही होता है । मुसलमानों की दृष्टि में, देवी देवताओं की पूजा से निकृष्ट विश्वास दूसरा नहीं है मुसलमानों की आत्मा, बुद्धि और परिणति इस प्रकार के निकृष्ट विश्वासधारियों को अल्लाह के क्रोध से बचाने के साथ जुड़ा हुई है । जब मुसलमान इस प्रकार के लोगों से उनको बचाने को अपना कर्त्तव्य समझकर उन्हें तब तक प्रताड़ित करते है।, जब तब कि वे उन झूठ देवी देवजाओं में विश्वास को त्यागकर मुसलमान न हो जाएं । इस प्रकार के निकृष्ट विश्वास को त्यागकर मुसलमान हो जाने पर वे भी दूसरे मुसलमानें के समान व्यवहार के अधिकारी हो जाते हैं इस प्रकार के निकृष्ट विश्वास करने वालों के विरुद्ध युद्ध करना इस कारण से एक दयाजनित कार्य ही है क्योंकि उससे समान भ्रातृत्ववाद को बल मिलता है । 1 (2)

कुरान में धर्म प्रचार के लिए बल प्रयोग के विरुद्ध कुछ आयते हैं

किन्तु अनेक विशिष्ट मुस्लिम विद्वानों का यह भी कहना है कि काफिरों को कत्ल करने के आदेश देने वाली आयत (9 : 5) के अवतरण के पश्चात् कुफ्र और काफिरों के प्रति किसी प्रकार की नम्रता अथवा सहनशीलता का उपदेश करने वाली तमाम आयतें रद्द कर दी गयी है। । (3) शाहवली उल्लाह का कहना है कि इस्लाम की घोषण के पश्चात् बल प्रयोग , बल प्रयोग नहीं हे । सैयद कुत्व का कहना है कि '' मानव मस्तिष्क और हृदय को सीधे सीधे प्रभावित करने से पहले यह आश्यक है कि वे परिस्थितियाँ, जो इसमें बाधा डालती हैं, बलपूर्वक हटा दी जाए ' । (4) इस प्रकार वह भी बल प्रयोग को आवश्यक समझते हैं । जमाते इस्लामी के संस्थापक सैयद अबू आला मौदूदी बल प्रयोग को इसलिए उचित ठहराते हैं कि जो लोग ईश्वरीय सृष्टि के नाजायज मालिक बन बैठे हैं ओर खुदा के बन्दों को अपना बंदा बना लेते है वे अपने प्रभुत्व से, महज नसीहतों के आधार पर, अलग नहीं हो जाया करते इसीलिए मौमिन (मुसलमान) को मजबूरन जंग करना पड़ता है ताकि अल्लाह की हुकूमत (इस्लामी हुकूमत) की स्थापना के रास्ते में जो बाधा हो, उसे रास्ते से हटा दें । (5) यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि इस्लाम के अनुसार पृथ्वी के वास्तविक अधिकारी अल्लाह, उसके रसूल मौहम्मद और उनके उत्तराधिकारी मुसलमान ही हैं । (6) इनके अतिरिक्त, जो भी गैर मुस्लिम शासक हैं वे मुसलमानो के राज्यापहरण के दोषी हैं । अपहरण की गयी अपनी वस्तु को पुनः प्राप्त करने लिए लड़ा जाने वाल युद्ध तो सुरक्षात्मक ही होता है ।

19 दिसम्बर 1421 के लेख के अनुसार, जाफर मक्की नामक विद्वान का कहना है कि '' हिन्दुओं इसलाम ग्रहण करने के मुख्य कारण थे मृत्यु भय, परिवार को गुलाम बनाए जाने का भय, आर्थिक लोभ (पारितोषिक, पेन्शन, लूट का माल) धर्मान्तरित होने वालों के पैतृक धर्म में प्रचलित अन्धविश्वास और अन्त में इस्लाम के प्रचारकों द्वारा किया गया

प्रभावशाली प्रचार – (जाफर मक्की द्वारा 19 दिसम्बर, 1421 को लिखे गए एक पत्र से) (7)

अगले अध्यायों में , हम इतिहास से यह बताने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वजों का इन विविध तरीकों से धर्म परिवर्तन किया गया ।

आर्थिक लोभ

शासकों द्वारा स्वार्थ जनित मुस्लिम तुष्टिकरण

मौहम्मद साहब के जीवन काल से बहुत पहले से, अरब देशों का दक्षिणी पूर्वी देशों से समुद्री मार्ग द्वारा भारत के मालाबवार तट पर होते हुए बड़ा भारी व्यापार था । अरब नाविकों का समुद्र पर लगभग एकाधिकार था । मालाबार तट पर अरबों का भारत से कितना व्यापार होता था, वह केवल इस तथ्य से समझा जा सकता है कि अरब देश से दस हजार घोड़े प्रतिवर्ष भारत में आयात होते थे । (9) और इससे कहीं अधिक मूल्य का सामान लकड़ी, मसाले, रेशम इत्यादि निर्यात होते थें । स्पष्ट है कि दक्षिण भारत के शासकों की आर्थिक सम्पन्नता इस व्यापार पर निर्भर थी । फलस्वरूप भारतीय शासक इन अरब व्यापारियों कें और नाविकों को अनेक प्रकार से संतुष्ट रखने का प्रयास करते थे । मौहम्मद साहब के समय में ही पूरा अरब देश मुसलमान हो गया , तो वहाँ से अरब व्यापार मालावार तट पर अपने नए मत का उत्साह और पैगम्बर द्वारा चाँद के दो टुकड़े कर देने जैसी चमत्कारिक कहानियाँ लेकर आए । वह भारत का अत्यन्त अवनति का काल था । न कोई केन्द्रीय शासन रह गया था और न कोई राष्ट्रीय धर्म । वैदिक धर्म का ह्रास हो गया था और अनेक मत मतान्तर , जिनका आधार अनेक प्रकार के देवी देवताओं में विश्वास था , उत्पन्न हो गए थे । मूर्ति पूजा और छुआछूत का बोलबाता भा । ऐसे अवनति काल में इस्लाम एकेश्वरवाद और समानता का संदेश लेकर समृद्ध व्यापार रूप में भारत में प्रविष्ट हुआ । मौहम्मद साहब की शिक्षाओं ने, जो

एक चमत्कार किया है वह , यह है कि प्रत्येक मुसलमान इस्लाम का मिशनरी भी होता है और योद्धा भी इसलिए जो अरब व्यापारी और नाविक दक्षिण भारत में आए उन्होंनं इस्लाम का प्रचार प्रारंभ कर दिया । जिस भूमि पर सैकड़ों मत मतान्तर हों और हजारों देवी देवता पूजे जाते हों वहाँ किसी नए मत को जड़ जमाते देर नहीं लगती विशेष रूप से यदि उसके प्रचार करने वालों में पर्याप्त उत्साह हो और धन भी ।

अवश्य ही इस प्रचार के फलस्वरूप हिन्दुओं के धर्मान्तरण के विरुद्ध कुछ प्रतिक्रिया भी हुई और अनेक स्थानों पर हिन्दू मुस्लिम टकराव भी हुआ । क्योंकि शासकों की समृद्धि और ऐश्वर्य मुसलमान व्यापारियों पर निर्भर करता थाा, इसलिए इस प्रकार के टकराव में शासक उन्हीं का पक्ष लेते थे, और अनेक प्रकार से उनका तुष्टीकरण करते थें । फलस्वरूप हिन्दुओं के धर्मान्तरण करने में बाधा उपस्थित करने वालों को शासन बर्दाश्त नहीं करता था । अपनी पुस्तक '' इंडियन इस्लाम '' में टाइटस का कहना है कि '' हिन्दू शासक अरब व्यापारियों का बहुत ध्यान रखते थे क्योंकि उनके द्वारा उनको आर्थिक लाभ होता था और इस कारण हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन में कोई बाधा नहीं डाली जा सकती थी । केवल इतना हीं नहीं , अत्यन्त निम्न जातियों से धर्मान्तरित हुए भारतीय मुसलमानों को भी शासन द्वारा वही सम्मान और सुविधाएँ दी जाती थी जो इन अरब (मुसलमान) व्यापारियों को दी जाती थी । 11 (9) ग्यारवीं शताबदी के इतिहासकार हदरीसों द्वारा बताया गया है कि '' अनिलवाड़ा में अरव व्यापारी बड़ी संख्या में आते हैं और वहाँ के शासक और मंत्रियों द्वारा उनकी सम्मानपूर्वक आवभगत की जाती है और उन्हें सब प्रकार की सुविधा औ सुरक्षा प्रदान की जाती है 11 (10)
दूसरा मुसलामन इतिहासकार, मौहम्मद ऊफी लिखता है कि कैम्बे के मुसलमानों पर जब हिंदुओं ने हमला किया तो वहाँ के शासक सिराज (1094 – 1146) ने न केवल अपनी प्रजा के उन हिंदुओं को दंड दिया अपितु उन मुसलामनों एक मस्जिद बनाकर भेंट की । (11) एक शासक तो अपने मंत्रियों समेत अरब देश जाकर मुसलामन ही हो गया । (12)

मृत्यु का भय और परिवार की गुलामी

'' इस्लाम का जन्म जिस वातावरण में हुआ था वहाँ तलवार ही सर्वोच्च कानून था और है ।...................... मुसलमानों में तलवार आज भी बहुतायत से दृष्टिगोचर होती है ˙ यदि इस्लाम का अर्थ सचमुच में ही ' शान्ति ' है तो तलवार मो म्यान में बंद करना होगा । '' (महात्मा गाँधी : यंग इंडिया, 30 सित, 1927)

जहाँ दक्षिण भारत में इस्लाम, शासकों के आर्थिक लोभ के कारण एवं मुस्लिम व्यापारियों के शांतिपूर्ण प्रयासों द्वारा पैर पसार रहा था , वहीं उत्तर भारत में वह अरब, अफगानी, तूरानी ईरानी, मंगोल और मुगल इत्यादि मुस्लिम आक्रंताओं द्वारा कुरान और तलवार का विकल्प लेकर प्रविष्ट हुआ । इन आक्रांताओं ने अनगिनत मंदिर तोड़े, उनके स्थान वर मस्जिद, मकबरे, और खानकहें बनाए । उन मस्जिदों की सीढ़ियों पर उन उपास्य मूर्तियों के खंडित टुकड़ों को बिछाया जिससे वह हिन्दुओं की आँखों के सामने सदैव मुसलमानों के जूतों से रगड़ी जाकर अपमानित हों और हिन्दू प्रत्यक्ष देखें कि उन बेजान मूर्तियों में मुसलमानों का प्रतिकार करने की कोई शक्ति नहीं है। उन्होंनं मंदिरों और हिन्दू प्रजा से, जो स्वर्ण और रत्न, लूटे उनकी मात्रा मुस्लिम इतिहासकार सैकड़ों और सहस्रों में देते हैं जिन हिन्दुओं का इस्लाम स्वीकार करने से इनकार करने पर वध किया गया , उनकी संख्या कभी कभी लाखों में दी गयी है और उनमें से जो अवयस्क बच्चे और स्त्रियां गुलाम बनाकर विषय वासना के शिकार बने, उनकी संख्या सहस्रों में दी गयी है । और उसके सैनिकों में बाटँ दिए जाते थे और शेष 1/5 को, शासकों अथवा खलीफा इत्यादि को भेट में भेज दिए जाते थे और सहस्रों की संख्या में वह विदेशों में भेड़ बकरियों की तरह गुलामों की मंडियों में बेच दिए जाते थे । स्वयं दिल्ली में भी इस प्रकार की मंडियाँ लगती थी । भारत की उस समय की आबादी केसल दस बारह करोड़ रही होगी । ऐसी दशा में लाखों हिन्दुओं के कत्ल और

हजारों के गुलाम बनाए जाने से समस्त भारत के हिन्दुओं पर कैसा आतंक छाया होगा , इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है ।

मुसलमानों के उन हिन्दु पूर्वजों का चरित्र कैसा था । अल इदरीसी नामक मुस्लिम इतिहासकार के अनुसार '' न्याय करना उनका स्भाव है । वह न्याय से कभी परामुख नहीं होते । इनकी विश्वसनीयता, ईमानदारी और अपनी वचनबद्धता को हर सूरत में निभाने की प्रवृत्ति विश्व विख्यात है । उनके इन गुणों की ख्याति के कारण सम्पूर्ण विश्व के व्यापारी उनसे व्यापार करने आते है । (13)

अलबरूनी के अनुसार, जो महमूद गजनवी के साथा भारत आया था, अरब विद्वान, बौद्ध भिक्षुओं और हिन्दू पंडितों के चरणों में बैठकर दर्शन ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, रसायन और दूसरे विषयों की शिक्षा लेते थे । खलीफा मुसूर (745 – 76) के उत्साह के कारण अनेक हिन्दू विद्वान उसके दरबार पह्रुँच कगए । 771 ई. में सिन्धी हिन्दुओं के एक शिष्ट मंडल ने उसको अनेक ग्रंथ भेंट किए थे । ब्रह्म सिद्धान्त और ज्योतिष संबंधी दूसरे ग्रंथें का अरबी भाषा में अनुवाद भारतीय विद्वानों की सहायतासे इब्राहीम अल फाजरी द्वारा बगदाद में किया गया था ।
बगदाद के खलीफा हारु अल रशीद के बरमक मंत्रियों कें (मूल संस्कृत पर प्रमुख) के परिवार जो बौ़द्ध धर्म त्यागकर, मुसमलामान हो गए थे, निरन्तर अरबी विद्वानों को बगदाद आने को आमंत्रित करते थे । एक बार जब खलीफा हारु अल रशीद एक ऐसे रोग से ग्रस्त हो गए, जो स्थानीय हकीमों की समझ में नहीं आया , जो उन्होंनं हिन्दू वैद्यों को भारत से बुलावाया । मनका नामक हिन्दू वैद्य ने उनको ठीक क्र दिया । मनका बगदाद में ही बसा गया । वह बरमाकों के अस्पताल से संबंद्ध हो गया और उसने अनेक हिन्दू ग्रंथों का फारसी और अरबी में अनुवाद किया ।

इब्न धन और सलीह, जो धनपति और भोला नामक हिन्दुओं के वंशज थे, बगदाद के अस्पतालों में अधीक्षक नियुक्त किए गए थे । चरक, सुश्रुत के अष्टांग ह्रद्य निदान और सिद्ध योग का तथा स्त्री रोगों, विषों,

उनके उतार की दवाइयों , दवाइयों के गुण दोष, नशें की वस्तुओं, स्नायु रोगों संबंधी अनेक रोगों से संबंधित हिन्दू ग्रंथों का वहाँ खलीफा द्वारा पहलवी और अरबी भाषा में अनुवाद कराया गया, जिससे गणित और चिकित्सा शास्त्र का ज्ञान मुसलमानों में फैला । (के.एस. लाल – लीगेसी ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया, पृ. 35:36) । फिर भी इस्लाम इस विज्ञान युक्त संस्कृति को ' जहालिया ' अर्थात् मूर्खतापूर्ण संस्कृति मानता है और उसको नष्ट कर देना ही उसका ध्येय रहा है क्योंकि उनका दोष यह था कि वे मुसलमान नहीं थे । इस्लाम के बंदों के लिए उनका यह पाप उन्हें सब प्रकार से प्रताड़ित करने, वध करने, लूटने और गुलाम बनााने के लिए काफी था ।

मुस्लिम इतिहाकारों ने इन कत्लों और बधिक आक्रमणकारियों द्वारा वध किए गए लोगों के सिरों की मीनार बनाकर देखने पर आनंदित होने के दृश्यों के अनेक प्रशंसात्मक वर्णन किए हैं । कभी कभी स्वयं आक्रमणकारियों और सुल्तानों द्वारा लिखत अपनी जीवनियों में उन्होंनं इन बर्बरताओं पर अत्यंत हर्ष और आत्मिक संतोष प्रकट करते हुए अल्लाह को धन्यवाद दिया है कि उनके द्वारा इस्लाम की सेवा का इतना महत्त्वपूर्ण कार्य उनके द्वारा सिद्ध हो सका ।

इन बर्बरताओं के ये प्रशंसात्मक वर्णन, जिनके कुछ मूल हस्तलेख आज भी उपलब्ध हैं, उन तथा कथित धर्मनिरपेक्ष आधुनिक, इतिहासकारों के गले की हड्डी बन गए है , जो इन ऐतिहासिक तथ्यों को हिन्दू मुस्लिम एकता की मृग मरीचिका को वास्तविक सिद्ध करने के उनके प्रयासों में बाधा समझते हैं इस उद्देश्य से वे इस क्रूरता को हिन्दुओं से छिपाने के लिए झूठी कहानियों के तानों बानों की चादरे बुनते हैं । परन्तु ये क्रूरता के ढेर इतने विशाल हैं कि जो छिपाए नहीं छिपते हैं ।

दुर्भाग्यवश भारतीय शासकों का चिंतन आज भी वही है जो 7 वीं शताबदी में दक्षिण में इस्लाम के प्रवेश के समय वहाँ के हिन्दू शासकों का था । यदि उन दिनों खाड़ी देशों से व्यापार द्वारा आर्थिक लाभ का लोभ था तो अब मुस्लिम वोटों की सहायता से प्रांतों और केन्द्र में सत्ता प्राप्त

करने और सत्ता में बने रहने का लोभ है । यह लोभ साधारण नहीं है । जिस प्रकार करोड़ों और अरबों रुपए के घोटाले प्रतिदिन उजागर हो रहे हैं , जिस प्रकार के मुगलिया ठाठ से हमारे ' समाजवादी धर्मनिरपेक्ष ' नेता रहते है। , वह तो अच्छे अच्छे ऋषि मुनियों के मन को भी डिगा सकते हैं इसलिए भारतीय बच्चों को दूषित इतिहास पढ़ाने पर शासन बल देता है । एन. सी. ई. आर. टी. ने जो सरकारी और सरकार द्वारा सहायता प्राप्त सभी स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों के लेखन और प्रकाशन पर नियत्रं.ण रखने वाला केंन्द्रीय शासन का संस्थान है, लेखकों कें और प्रकाशकों के ' पथ प्रदर्शन ' के लिए सुझाव दिए हैं । इन सुझावों का संक्षिप्त विवरण नई दिल्ली जनवरी 17, 1972 के इडियन एक्सप्रेस में दिया गया है । कहा गया है कि '' उद्देश्य यह है कि अवांछित इतिहास और भाषा की ऐसी पुस्तकों पाठ्य पुस्तकों में से हटा दिया जाए जिनसे राष्ट्रीय एकता निर्माण में और सामाजिक संगठन के विकसित होने में बाधा पड़ती है – राज्यों और तीन केन्द्र शासित प्रदेशों ने एन. सी. ई. आर. टी. के सुझाावों के तहत कार्य प्रारंभ भी कर दिया है ।

पश्चिमी बेंगाल के बोर्ड ऑफ सेकेन्ड्री एजुकेश्यान द्वारा 29 अप्रैल 1972 करे जो अधिसूचना स्कूलों और प्रकाशकों के लिए जारी की गयी उसमें भारत में मुस्लिम राज्य के विषय में कुछ '' शुद्धियाँ '' करने को कहा गया है जैसे कि महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ मंदिर आक्रमण करने का वास्तविक उद्देश्य औरंगजेब की हिन्दुओं के प्रति नीति इत्यादि सुझाावों में विशेष रूप से कहा गया है कि ''मुस्लिम शासन की आलोचना न की जाए । मुस्लिम आक्रमणकारियों और शासकों द्वारा मंदिरों के विध्वंस का नाम न लिया जाए । '' इस्लाम में बलात् धर्मान्तरण के वर्णन पाठ्य पुस्तकों से लिकाल दिए जाएं । (14)

तथा कथित ' धर्मनिरपेक्ष ' हिन्दू शासकाके कें और इतिहसकारों द्वारा इतिहास को झुठलाने के इन प्रभावी प्रयासों के फलस्वरूप सरकारी और सभी हिन्दू स्कुलों में शिक्षा प्राप्त हिन्दुओं की नयी पीढियाँ एक नितांत

झूठे ऐतिहासिक दृष्टिकोण को सत्य मान बैठी हैं कि इस्लाम गैर मुसलमानों के प्रति प्रेम और सहिष्णुता के आदेश देता है । भारत पर आक्रमण करने वाले मौहम्मद बिन कासिम, महमद गजनवी, मौहम्मद गौरी, तैमूर, बाबर अब्दाली इत्यादि मुसलमानों का ध्येय लूटपाट करना था , इस्लाम का प्रचार प्रसार नहीं था । उनके कृत्यों से इस्लाम का मूल्याकंन नहीं किया जाना चाहिए। ये लोग अपनी हिन्दू प्रजा के प्रति दयालु और प्रजावत्सल थे । कभी कभी उनके मंदिरों को दान देते थे । उन्हें देखकर प्रसन्न होते थे । '' जबकि वास्तविकता यह है कि हिन्दुओं के प्रति उनके उदार प्रकार के क्रूर आचरण का कारण उन सबके मन में अपने धर्म इसलाम के प्रति अपूर्व सम्मान और धर्मनिष्ठा थी और इस्लाम के प्रति धर्मनिष्ठता का अर्थ केवल इस्लाम के प्रति प्रेम ही नहीं ,अन्य सभी गैर इस्लामी धर्मों, दर्शनों और विश्वासों के प्रति घृणा करना भी है । (15)

मुस्लिम धार्मिक विद्वान उनको इसी कारण परम आदर की दृष्टि से इस्लाम के ध्वजारोहक के रूप में देखते हैं और उनने बच्चों को भी ऐसा ही करने की शिक्षा देते हैं

जहाँ एक ओर, हिन्दुओं की भावी पीढ़ियों को वास्तविकता से दूर रखकर भ्रमित किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् खड़े किए गए , लगभग 40 हजार मदरसों और 8 लाख मकतवों, में मुस्लिम बच्चों को गैर इस्लाम से घृणाा करना , और इन लुटेरों को इस्लाम के महापुरुष और उनके शासन को, अकबर के कुफ्र को प्रोत्साहन देने वाले शासन से बेहतर बताया जा रहा है । फिर इसमें आश्चर्य की क्या बात है कि भारत सरकार के एक मंत्री (गुलाम नबी आजाद) को कहना पड़ा कि –'' कश्मीर में जमाते इस्लामी द्वारा चलाएजाने वाले मदरसों ने देश के धर्म निरपेक्ष ढाँचे को बहुत हानि पहुँचाई है ।............ घाटी के नौजवानों का बन्दूक की संस्कुति से परिचय करा दिया है ं '' (16)

मंत्री जी के वक्तव्य से यह भ्रम हो सकता है कि उनका आरोप केवल जमाते इस्लामी द्वारा चलाए जाने वाले मदरसों के लिए ही सत्य है , दूसरों के के लिए नहीं । हिन्दु डॉ. मुशीरुल हक, जो न केवल स्वयं मदरसा शिक्षा प्राप्त है। , अपितु विदेशी विश्व विद्यालयों के भी विद्वान हैं के अनुसार '' सभी मदरसों में पाठ्यचर्या, पाठ्य पुस्तकें, पाठ्यनीति अकादमिक तथा धार्मिक शिक्षण एक जैसा ही है । '' (7) यह भिन्न भी नहीं हो सकता क्योंकि बुनियादी पुस्तकें, कुरान हदीस इत्यादि एक ही हैं ।

अफगानिस्तान में मदरसों में शिक्षा पा रहे सशस्त्र विद्यार्थियों (तालिबान) द्वारा गृह युद्ध में कूदकर जिस प्राकर अपेक्षाकृत उदारवादी मुस्लिम शाासकों के दाँत खट्टे कर दिए गए, उससे उड्डयन मंत्री के उपरोक्त उद्धृत वक्तव्य को बल मिलता है । यह तालिवान कट्टरवादी (शुद्ध) इस्लाम की स्थापनाके लिए समाप्ति अनुशासनबद्ध जिहादी सेनाओं के समर्पित योद्धा हैं उनका उपयोग किसी समय भी इस रूप में किया जा सकता है । चाहे अफगानिस्तान हो या काश्मीर अथवा कोई दूसरा देश।

इस प्रारंभिक विश्लषण के पश्चात् आइए देखें कि भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वजों को किस प्रकार शासकों द्वारा तलवार की नोक पर धर्मपरिवर्तन परमजूर होना पड़ा । उनके साथ क्या घटा । वह कैसा आतंक था । अथवा किस प्रकार उनके विश्वास के भोलेपन का लाभ उठाकर उनका धर्म परिवर्तन आक्रामक शासकों द्वारा किया गया ।

4 – मुस्लिम आक्रामकों और शासकों द्वारा हिन्दुओं का बलात् धर्म परिवर्तन

1. मौहम्मद बिन कासिम (712 ई.)

इस्लामी सेना का पहला प्रवेश, सिन्ध में, 17 वर्षीय मौहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में 711–712 ई. में हुआ । प्रारभिक विजय के पश्चात उसने ईराक के गवर्नर हज्जाज को अपने पत्र में लिखा '' दाहिर का भतीजा, उसके योद्धा और मुख्य मुख्य अधिकारी का कत्ल कर दिए गएहैं । **हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित कर लिया गया है, अन्यथा कत्ल कर**

दिया गया है ।मूर्ति मंदिरों के स्थान मस्जिदें खड़ी कर दी गयी हैं। अजान्रदी जाती है । (11 (1))

वहीं मुस्लिम इतिहाकार आगे लिखता है – " मौहम्मद बिन कासिम ने रिवाड़ी का दुर्ग विजय कर लिया । वह वहाँ दो तीन दिन ठहरा । **दुर्ग में मौजूद 6000 हिन्दू योद्धा वध कर दिए गए, उनकी पत्नियाँ, बच्चे, नौकर चाकर सब कैद कर लिए (दास बना लिए) । सह संख्या लगभग 30 हजार थी इनमें दाहिर की भानजी समेत 30 अधिकारियों की पुत्रियाँ भी थीं ।**

विश्वासघात

बहमनाबाद के पतन के विषय में ' चचनामें का मुस्लिम इतिहासकार लिखता है कि बहमनाबाद से मौका बिसाया (बौद्ध) के साथ कुछ लोग आकर मौहम्मद बिन कासिम से मिले । मौका ने उसे कहा यह (बहमनाबाद) दुर्ग देश का सर्वश्रेष्ठ दुर्ग है यदि तुम्हारा इसपर अधिकार हो जाए तो तुम पूर्ण सिन्ध के शासक बन जाओगे । तुम्हारा भय सब ओर व्याप्त हो जाएगा और लोग दाहिर के वंशजों का साथ छोड़ देंगे । बदले में उन्होंने अपने जीवन और(बौद्ध) मत की सुरक्षा की माँग की दाहिर ने उनकी शर्तें मान लीं । इकरारनामें के अनुसार जब मुस्लिम सेना ने दुर्ग पर आक्रमण किया तो ये लोग कुछ समय के लिए दिखाने के वास्ते लड़े और फिर शीघ्र ही दुर्ग का द्वार खुला छोड़कर भाग कए। विश्वासघात द्वारा बहमनाबवाद के दुर्ग पर बिना युद्ध हिए ही मुस्लिम सेंना का कब्जा हो यगा । (3)

बहमनाबाद में सभी सैनिकों का वध कर दिया गया । उनके 30 वर्ष की आयु से कम के सभी परिवारजनों को गुलाम बनाकर बेच दिया गया । दाहिर की दो पुत्रियों को गुलामों के साभ खलीफा को भेंट स्वरूप भेज दिया गया । कहा जाता है कि 6000 लोगों का वध किया गया किन्तु कुछ कहते हैं कि यह संख्या 16000 थी । ' अलविलादरी के अनुसार 26000 (4) । मुल्तान में भी 6000 व्यक्ति वध किए गए । उनके सभी

रिश्तेदार गुलाम बना लिए गए । (5) अन्ततः सिंध में मुसलमानें ने न बौद्धों को बख्शा , न हिन्दुओं को ।

सुबुक्तदीन (977–997)

अल उतबी नामक मुस्लिम इतिहासकार द्वझरा लिखत '' **तारीखे यामिनी** '' के अनुसार '' सुल्तान ने उस (जयपाल) के राज्य पर धावा बोलने के अपने इरादे रूपी तलवार की धार को तेज किया जिससे कि वह **उसको इस्लाम अस्वीकारने की गंदगी से मुक्त कर सके ।** अमीर लत्रगान की ओर बढ़ जो कि एक शक्तिशाली और सम्पदा से भरपूर विश्यात नगरी है । **उसे विजय कर, उसके आसपास के सभी क्षेत्रों में, जहाँ हिन्दू निवास करते थे, आग लगा दी गयी । वहाँ के सभी मूर्ति मंदिर तोड़कर वहाँ मस्जिदें बना दी गयी । उसकी विजय यात्रा चलती रही और सुल्तान उन (मूर्ति पूजा से) प्रदूषित भाग्यहीन लोगों को कत्ल कर मुसलमानों को संतुष्ट करता रहा । इस भयानक कत्ल करने के पश्चात् सुल्तान और उसके मित्रों के हाथ लूट के माल को गिनते गिनते सुन्न हो गए । विजय यात्रा समाप्त होने पर सुल्तान ने लौट कर जब इस्लाम द्वारा अर्जित विजय का वर्णन किया तो छोटे वड़े सभी सुन सुन कर आत्म विभोर हो कए और अल्लाह को धन्यवाद देने लगे ।**

महमूदगजनवी (997 – 1030)

भारत पर आक्रमण करने से पहले , इस 20 वर्षीय सुल्तान ने धार्मिक शपथ ली कि वह प्रति वर्ष भारत पर आक्रमण करता रहेगा, जब तक कि वह देश मूर्ति और बहुदेवता पूजा से मुक्त होकर इस्लाम ग्रहण न कर ले । अल उतबी इस सुल्तान की भारत विजय के विषय में लिखता है – अपने सैनिकों को शस्त्रास्त्र बाँट कर अल्लाह से मार्ग दर्शन और शक्ति की आस लगाए सुल्तान ने भारत की ओर प्रस्थान किया । पुरुषपुर (पेशावर) पहुँचकर उसने उस नगर के बाहर अपने डेरे गाढ़ दिए । (7)

मुसलमानों को अल्लाह के शत्रु काफिरों से बदला लेते दोपहर हो गयी । इसमें 15000 काफिर मारे गए और पृथ्वी पर दरी की भाँति बिछ गए पहाँ वह जंगली पशुओं और पक्षियों का भोजन बन गए । जयपाल के गले से जो हार मिला उसका मूल्य 23 लाख दीनार था । उसके दूसरे रिख्तेदारों और चुद्ध में मारे गए लोगों की तलाशी से 4 लाख दीनार का धन मिला । इसके अतिरिक्त अल्लाह ने अपने मित्रों को 5 लाख सुन्दर गुलाम स्त्रियाँ और पुरुष भी बख्शें । (8)

कहा जाता है कि पेशावर के पास वाये हिन्द पर आक्रमण के समय (1001 – 3) महमूद ने महाराज जयपाल और उसके 15 मुख्य सरदारों और रिश्तेदारोंको गिरफ्तार कर लिया था। सुखला की भाँति इनमे से कुछ मृत्यु के भय से मुसलमान हो गए । भेरा में, सिवाय उनके, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया, सभी निवासी कत्ल कर दिए गए । स्पष्ट है कि इस प्रकार धर्म परिवर्तन करने वालों की संख्या काफी रही होगी । (9)

मुल्तान में बड़ी संख्या में लोग मुसलमान हो गए । जब महमूद ने नवासा शाह पर (सुखपाल का धर्माण्तरण के बाद का नाम) आक्रमण किया तो उतवी के अनुसार महमूद द्वारा धर्माण्तरण के जोश का अभूतपूर्व प्रदर्शन हुआ । (अनेक स्थानों पर महमूद द्वारा धर्माण्तरण के जेम्स रेनाल्ड्स द्वारा पृ. 451, 452, 455, 460, 462, 463 ई. डी–2 पृ–27 , 30,33,40,42,43,48,49,परिशिष्ट पृ. 434–78 (10)

काश्मीर घाटी में भी बहुत से काफिरों को मुसलमान बनाया गया और उस देश में इस्लााम फैलाकर वह गजनी लौट गया । (11)

उतबी के अनुसार जहाँ भी महमूद जाता था , वहीं के निवासियों को इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर करता था । इस बलात् धर्म परिवर्तन अथवा मृत्यु का चारों ओर इतना आतंक व्याप्त हो गया था कि अनेक शासक बिना युद्ध किए ही उसके आने का समाचार सुनकर भाग खड़े होते थे । भीमपाल द्वारा चाँद राय को भागने की सलाह देने का यही कारण था कि कहीं राय महमूद के हाथ पड़कर बलात् मुसलमान न बना लिया

जाए जैसा कि भीमपाल के चाचा और दूसरे रिश्तेदारों के साथ हुआ था । (12)

1023 ई. में किरात, नूर, लौहकोट और लाहौर पर हुए चौहदवें आक्रमण के समय किरात के शासक ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और उसकी देखा देखी दूसरे बहुत से लोग मुसलमान हो गए । निजामुद्दीनके अनुसार देश के इस भाग में इस्लाम शांतिपूर्वक भी फैल रहा था, और बलपूर्वक भी । (13) सुल्तान महमूद कुरान का विद्वान था और उसकी उत्तम परिभाषा कर लेता थ। (13क) इसलिएयह कहना कि उसका कोई कार्य इस्लाम विरुद्ध था, झूठा है ।

राष्ट्रीय चुनौती

हिन्दुओं ने इस पराजय को राष्ट्रीय युनौती के रूप में लिया । अगले आक्रमण के समय जयपाल के पुत्र आनंद पाल ने उज्जैन, ग्वालियर, कन्नौज, दिल्ली और अजमेर के राजाओं की सहायता से एक बड़ी सेना लेकर महमूद का सामना किया । फरिश्ता लिखता है कि 30000 खोकर राजपूतों ने जो नंगे पैरों और नंगे सिर लड़ते थें, सुल्तान की सेना में घुस कर थोड़े से समय में ही चार हजार मुसलमानों को काट कर रख दिया । सुल्तान युद्ध बंद की वापिस जाने की सोच ही रहा था कि आनंद पाल का हाथी अपने ऊपर नेपथा के अग्नि के गोले के गिरने से भाग खड़ा हुआ । हिन्दू सेना भी उसके पीछे भाग खड़ी हुई ।

सराय (नारदीन) का विध्वंस

सुल्तान ने (कुछ समय ठहरकर) फिर हिन्द पर आक्रमण करने का इरादा किया। अपनी घुड़सवार सेना को लेकर वह हिन्द के मध्य तक पहुँच गया । वहाँ उसने ऐसे ऐसे शासकों को पराजित किया जिन्होंने आज तक किसी अन्य व्यक्ति के आदेशों का पालन करना नहीं सीखा था । सुल्तान ने उनकी मूर्तियाँ तोड़ डाली और उन दुष्टों को तलवार के घाट उतार दिया । उसने इन शासकों के नेता से युद्ध कर उन्हें पराजित कर दिया । **अल्लाह के मित्रों ने प्रत्येक पहाड़ी और वादी को काफिरों के**

खून से रंग दिया और अल्लाह ने उनको घोड़े, हाथियारों और बड़ी भारी समंपत्ति बख्शी । (15)

नंदना की लूट

जब सुल्तान ने हिंद को मूर्ति पूजा से मुक्त कर शुद्ध कर दिया और उनके मंदिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं, तब उसने हिन्द की राजधानी पर आक्रमण की ठानी जिससे वहाँ के मूर्तिपूजक निवासियों को अल्लाह की एकता में विश्वास न करने के कारण दंडित करे । 1013 ई. में एक अंधरी रात्रि को उसने एक बड़ी सेना के साथ प्रस्तान किया । (16)

(विजय के पश्चात) सुल्तान लूट का भारी सामान ढोती अपनी सेना के पीछे पीछे चलता हुआ, वापिस लौटा । **गुलाम तो इतने थे कि गजनी की गुलाम मंडी में उनके भाव बहुत गिर कए । अपने (भारत) देश में अति प्रतिष्ठा प्राप्त लोग साधारण दुकानदारों के गुलाम होकर पतित हो गए ।** किन्तु यह तो अल्लाह की महानता है कि जो अपने मजहब को प्रतिष्ठित करता हे और मूर्ति पूजा को अपमानित करता है ।(17)

थानेसर में कत्ले आम

थानेसर का शासक मूर्ति पूजा में घोर विश्वास करता था और अल्लाह (इस्लाम) को स्वीकार करने को किसी भी प्रकार से तैयार नहीं था। सुल्तान ने (उसके राज्य से) मूर्ति पूजा को समाप्त करने के लिए अपने बहादुर सैनिकों के साथ कूच किया । काफिरों के खून से, नदी लाल हो गयी और उसका पानी पीने योग्य भी नहीं रहा । यदि सूर्य न डूब गया होता तो और अधिक शत्रु मारे जाते । अल्लाह की कृपा से विजय प्राप्त हुई जिसने इस्लाम , को सदैव सदैव के लिए सभी दूसरे मत मतान्तरों से श्रेष्ठ साबित किया है । सुल्तान, इतना लूट का माल लेकर लौटा जिसका कि हिसाब लगा पाना मुश्किल है । स्तुति अल्लाह की जो सारे जगत का रक्षक है कि वह इस्लाम और मुसलमानों को इतना सम्मान बख्शता है । (18)

अस्नी पर आक्रमण

जब चंदेल को सुल्तान के आक्रमण का समाचार मिला तो डर के मारे उसके प्राण सूख गए । उसकेसामने साक्षात मृत्यु मुँह बाएं खड़ी थी । सिवाय भागने के उसके सामने दूसरा विकल्प नहीं था । सुल्तान ने आदेश दिया कि उसके पाँच दुर्गों की बुनियाद तक खोद डाली जाए । वहाँ के निवासियों को उनके मल्बें दवा दिया अथवा गुलाम बना लिया गया । चन्देल के भाग जाने के कारण सुल्तान ने निराश होकर अपनी सेना को चान्द राय पर आक्रमण करने का आदेश दिया जो हिन्द के महान शासकों मेंसे एक है औरसरदसावा दुर्ग में निवास करता है । (19)

सरसावा (सहारनपुर) में भयानक रक्तपाल

सुल्तान ने अपने अत्यंत धार्मिक सैनिकों को इकट्ठा किया और शत्रु पर तुरन्त आक्रमण करने के आदेश दिए । फलस्वरूप बड़ी संख्या में हिन्दू मारे गए अथवा बंदी बनालिए गए । मुसलमानों ने लूट की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जब तक कि कत्ल करते करते उनका मन नहीं भर गया । उसके बाद ही उन्होंने मुर्दों की तलाशी लेनी प्रारम्भ की जो तीन दिन तक चली । लूट में साना, चाँदी, माणिक, सच्चे मोती, जो हाथ आए जिनका मूल्य लगभग 300000 (तीस लाख) दिरहम रहा होगा । गुलामों की संख्याा का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि प्रत्येक को 2 से लेकर 10 दिरहम तक में बेचा गया । शेष को गजनी ले जाया गया । दूर दूर के देशों से व्यापारी उनको खरीदने आए । मवाराउन नहर ईराक, खुरासान आदि मुस्लिम देश इन गुलामों से पट कए । गोरे, काले, अमीर , गरीब दासता की मसन जंजरों में बँधकर एक हो गए । (20)

सोमनाथ का पतन (1025)

अल काजवीनी के अनुसार '' अब महमूद सोमनाथ के विध्वंस के इरादे से भारत गया तो उसका विचार यही था (इतने बड़े उपास्य देवता के टूटने पर) हिन्दू (मूर्ति पूजा के विश्वास को त्यागकर) मुसलमान हो जाऐंगे । (21)

दिसम्बर 1025 में सोमनाथ का पतन हुआ । हिन्दुओं ने महमूद से विनती की कि जितना धन लेना चाहे ले ले, परन्तु मूर्ति को न तोड़े ।

महमूद ने कहा कि वह इतिहास में मूर्ति भंजक के नाम से मशहूर होना चाहता है, मूर्ति व्यापारी के नाम से नहीं । महमूद का यह ऐतिहासिक उत्तर ही यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि सोमनाथ मंदिर को विध्वंस करने का उद्देश्य धार्मिक था, लोभ नहीं ।
मूर्ति तोड़ दी गयी । दो करोड़ दिरहम की लूट हाथ लगी, पचास हजार हिन्दू कत्ल कर दिए गए । (21क)

लूट में मिले हीरे, जवाहरातों, सच्चे मोतियों, की जिनमें कुछ अनार के बराबर थे, गजनी में प्रदर्शनी लगायी गयी जिसको देशकर वहाँ के नागरिकों और दूसरे देशों के राजदूतों की आँखे फैल गयीं । (22)

मौहम्मद गौरी (1173–1206)

हसननिजामी के '' ताजुल मआसिर '' के अनुसार इस्लाम की सेना को पूरी तरह सुसज्जित कर विजय और शक्ति की पताकाओं को उड़ाता अल्लाह की सहायता पर भरोसा कर उस (मौहम्मद गौरी) ने हिन्दुस्थान की ओर प्रस्थान किया । (23)

मुस्लिम सेना ने पूर्ण विजय प्राप्त की । एक लाख नीच हिन्दू नरक सिधार गए (कत्ल कर दिए गए) । इस विजय के बाद इस्लामी सेना अजमेर की ओर बढ़ी वहाँ लूट का इतना माल मिला कि लगता था कि पहाड़ों और समुद्रों ने अपने गुप्त खजाने खोल दिए हों । सुल्तान जब अजमेर में ठहरा तो वहाँ उसने मूर्ति मंदिरों की बुनियादों तक को खुदवा डाला और उनके स्थान पर मस्जिदें बना दिये, जहाँ इस्लाम और शरीयत की शिक्षादी जा सके । (24)

फरिश्ता के अनुसार मौहम्मद गौरी द्वारा 4 लाख ' खोकर ' और ' तिहारिया ' हिन्दुओं को इस्लाम ग्रहण कराया गया । (25)

इब्ल अल असीर के द्वारा बनारस के हिन्दुओं का भयानक कत्ले आम हुआ । बच्चों और स्त्रियों को छोड़कर और कोई नहीं बख्शा गया । (26) स्पष्ट है कि सब स्त्री और बच्चों को गुलाम और मुसलमान बना लिया गया ।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210)

सुल्तान ने कोहरान दुर्ग और समाना का शासन , कुतुबुद्दीन को सौंप दिया । .... उसने अपनी तलवार से हिन्द को मूर्ति पूजा और बहुदेवतावाद की गंदगी से मुक्त कर दिया । अपनी शक्ति और निर्भयता से एक मंदिर भी ध्वस्त करने से नहीं छोड़ा । (27)

कुतुबुद्दीन ने दिल्ली में प्रवेश किया । नगर और उसके आस पास के क्षेत्रों से मूर्तियाँ और मूर्ति पूजा तिरोहित हो गयी। और मूर्तियों के गर्भगृहों पर मुसलमानों के लिए मस्जिदें बना दी गयी । (28)

1195 ई. में जब गुजरात के राजा भीम पर आक्रमण हुआ तो बीस हजार हिन्दू कैदी , मुसलमान बनाए गए । (30)

इब्न अल असीर का कहना है कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने हिन्दू के अनेक सूबों पर आक्रमण किए । (हर बार उसने कत्ले आम किए और लूट का बहुत सा सामान और कैदी लेकर लौटा ।

बनारस का विध्वंस

वहाँ से शाही सेना बनारस की ओरचल पड़ी जो हिन्द देश का हृद्य स्थान है । बनारस में लगभग 1000 मंदिरों को तोड़ कर उनके स्थान पर मस्जिदें खड़ी की गयीं । इस्लाम और शरीयत स्थापित किए गए और उनकी शिक्षा का प्रबंध किया गया ।

गुजरात मे ंप्रवेश

1197 ई. में विश्व विजयी खुसरु अजमेंर से नहर वाले के राय को नष्ट करने के इरादे से पूर्ण सैन्य ब ल के साथ चल पड़ा । प्रातः काल से दोपहर तक भंयकर युद्ध हुआ । मूर्ति पूजकों और नरक गामियों सेना भाग खड़ी हुई । उनके अधिकांश नेता युद्ध में कत्ल कर दिए गए । लगभग पचास हजार (50000) हिन्दुओं को कत्ल कर दिया गया । बीस हजार से अधिक गुलाम बना लिए गए । 20 हाथी और अनगिनत हथ्यिार विजेताओं के हाथ लगे । ऐसा लगता था कि सम्पूर्ण विश्व के शासकों के कोषागार उनको प्राप्त हो गए हैं ।

कालिंजर का पतन

कालिंजर का विख्यात दुर्ग जो अपनी मजबूती के लिए सिकन्दर की दीवार की भाँति विख्यात था, जीत लिया गया । मंदिरों को मस्जिदों में परिवर्तित कर दिया गया । .... मूर्ति पूजा का नामोनिशान मिटा दिया गया । .... 50000 हिन्दुओं के गले में गुलामी के पट्टे डाल दिए गए । हिन्दुओं की मृत देहों से मैदान काला दिखाई देने लगा । हाथी, पशु और बेशुमार हथियार लूट में हाथ आए । (33)

फखरुद्दीन मुबारक शाह के अनुसार **1202 ई. में कालिंजर में पचास हजार (50000) कैदी पकड़े गए ।** निश्चय ही जैसे सिंध की अरब विजय के पश्चाात हुआ, इन सत को, जो पकड़कर गुलाम बनाए गए थे, इस्लाम स्वीकार करना पड़ा । फरिश्ता साफ साफ लिखता है कि कालिंजर पर कब्जा होने पर पचास हजार गुलामों को इस्लाम में दीक्षित किया गया । (34) फलस्वरूप साधारण सिपाही अथवा गृहस्थ के पास भी कई कई गुलाम हो गए । (35)

दिल्ली का शुद्धिकरण

सुल्तान दिल्ली लौट गया । .... तब उसने उन मूर्ति पूजकों का नामोनिशान मिटा दिया , जिनके मस्तिष्क आकाश को छूते थे ।........................... इस्लाम के सूर्य का प्रकाश दूर दूर के मूर्ति पूजक क्षेत्रों में पहुँच गया । (36)

इसी समय कुतुबुद्दीन ऐबक के सिपहसलार मौहम्मद बहख्तियार खिलजी इस्लाम का प्रभुत्व स्थापित करने पूर्वी भारत में घूम रहे थे । सन् 1200 ई. में इन्होंने बिहार के नितांत असुरक्षित विश्वविद्यालय उदन्तरी पर आक्रमण कर वहाँ के बौद्ध विहार में रहने वाल`भिक्षुओं को कत्ल कर दिया । सन् 1202 ई. में उन्होंने सहसा ही नदिया पर आक्रमण कर दिया । बदायुनीं की ' मुतखबत तवारीख ' के अनुसार '' अतुल सम्पत्ति और धन मुसलमानों के हाथ लगा। '' बख्तियार ने पूजा स्थल और मूर्ति मंदिरों को तोड़कर, उनके स्थान पर मस्जिदें और खानकाहें स्थापित कर दिए । (11(37)) ऐबक के पश्चात शमशुद्दीन इल्तुतमिश का काल आया ।

सुल्तान इल्तुतमिश (1210–1236)

1231 ई. में इल्तुतमिश ने ग्वालियर पर आक्रमण कर दिया और बड़ी संख्या में लोगों को गुलाम बनाया । उसके द्वारा पकड़े और गुलाम बनाए गए महाराजाओं के परिवारीजनों की गिनती देना संभव नहीं है । (38)

अवध में चंदेल वंश के त्रैलोक्य वर्मन के विरुद्ध युद्ध में विजयी होने पर '' काफिरों के सभी बच्चे, पत्नियाँ और परिवारीजन विजयी सुल्तान के हाथ पड़े । 1253 ई. में रणथम्भौर में और 1259 में हरियाणा और शिवालिक जहाड़ों मे कम्पिल, पटियाली औश्र भोजपुर में यही कहानी दोहराई गयी । (39)

हिन्दू आसानी से इस्लाम ग्रहण नहीं करते थे, कयोकि अल बेरुनी के अनुसार हिन्दू यह समझते थे कि उनके धर्म से बेहतर दूसरा धर्म नहीं है और उनकी संस्कृति और विज्ञान से बढ़कर कोई दूसरी संस्कृति और विज्ञान नहीं है । (40) दूसरा कारण यह था कि इल्तुतमिश को उसके वजीर निजामुल मुल्क जुनैदी ने बताया था '' इस समय हिन्दुस्तान में मुसलाने दाल में नमक के बराबर हैं । अगर जोर जबरदस्ती की गयी तो वे सब संगठित हो सकते हैं और मुसलमानों को उनको दबाना संभव नहीं होगा । जब कुछ वर्षों के बाद राजधानी में और नगरों में मुस्लिम संख्या बढ़ जाए और मुस्लिम सेना भी अधिक हो जाए, उस समय हिन्दुओं को इस्लाम और तलवार में से एक का विकल्प देना संभव होगा । (11(41)) डॉ. के. एस. लाल के अनुसार , यह स्थिति तेरहवीं शताब्दी के पश्चात हो गयी थी और इसलिए बलात् धर्मान्तरण का कार्य तेहरवीं शताब्दी के बाद शीघ्र गति से चला ।

इल्तुतमिश ने भ्झी भारत के इस्लामीकरण में पूरा योगदान दिया । सन् 1234 में मालवा पर आक्रमण हुआ । वहाँ विदिशा का प्राचीन मंदिर नष्ट कर दिया गया । बदायुनी लिखता है : '' 600 वर्ष पुराने इस महाकाल के मंदिर को नष्ट कर दियार गया । इसकी बुनियाद तक खुदा कर राय विक्रमाजीत की पतिमा तोड़ डाली गयी । वह वहाँ से पीतल की कुछ प्रतिमाएँ उठा लाया । उनको पुरानी दिल्ली की मस्जिद के दरवाजों

और सीढ़ियों पर डालकर लोगों को उन पर चलने का आदेश दिया । (11(42)) 500 वर्षों के मुस्लिम आक्रमण ने हिन्दुओं को इतना दरिद्र बना दिया था कि मंदिरों में सोने की मूर्तियों के स्थान पीतल की मूर्तियाँ रखी जाने लगीं थीं । किन्तु अभी तो अत्याचार और भी बढ़ने थे ।

इल्तुतमिश के पश्चात् बलबन (1265 – 1287) का राज्य आया । रुहेलखण्ड के कटिहार क्षेत्र के राजपूतों के प्रदेश ने कभी मुसलमानों की सत्ता स्वीकार नहीं की थी । सन् 1284 ईत्र में बलबन ने गंगा पार कर इस क्षेत्र पर आक्रमण किया । बदायुनी के अनुसार '' दिल्ली छोड़ने के दो दिन बाद वह कटिहार पहुँचा। 7 वर्ष के ऊपर के सभी पुरुषों को कत्न कर दिया गया । शेष स्त्री पुरुषों को गुलाम बना लिया गया । (11(43))

खिलजी सुल्तान (1290 – 1316)

जब जलालुद्दीन खिलजी ने (1290 – 1296) रण थम्भौर दुर्ग पर चढ़ाई की तो रास्तें में झौन नामक स्थान पर उसने वहाँ के हिन्दू मंदिरों को नष्ट कर दिया । उनकी खंडित मूर्तियों को जामा मस्जिद, दिल्ली, की सीड़ियों पर डालने के लिए भेज दिया गया जिससे वह मुसलमानों द्वादा सदैव पददलित होती रहें । (44)

किन्तु इस जलालुददीनने , मलिक छज्जू मुस्लिम विद्रोही को कत्ल करने से , यह कहकर इंकार कर दिया कि '' वह एक मुसलमान का वध करने से अपनी सिंहायन छोड़ना बेहतर समझता है । (11(45)) दया और भातृभाव केवल मुसलमानों के लिए है काफिरों के लिए नही । (46)

अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316) जो जलालुद्दीन खिलजी का भतीजा और दामाद भी था, और जिसका पालन पोषण भी जलालुद्दीन ने पुत्रवत किया था, धोखे से , वृद्ध सुल्तान का वध कर दिल्ली की गद्दी पर बैठा । हिन्दुओं के लूटे हुए धन को दोनों हाथों से लुटा कर उसने जलालुद्दीन के विश्वस्त सरदारों को खरीद लिया अथवा कत्ल कर दिया । जब उसकी गद्दी सुरक्षित हो गयी तो उसका काफिरों (हिन्दुओं) के

दमन और मूर्तयों को खंडित करने का धार्मिक उन्माद जोर मारने लगा । 1297 ई. में उसने अपने भ्राता मलिक मुइजुद्दीन और राजय के मुख्य आधार नसरत खाँ को, जो एक उदार और बुद्धिमान योद्धा था, गुजरात में कैम्बे (खम्बात) पर, जो आबादी संपत्ति में भारत का विख्यात नगर था आक्रमण करने भेजा । चौदह हजार (14000) घुड़सवार और बीस हजार पैदल सैनिक उसके साथ थे । (47)

मंजिल पर मंजिल पार करते उन्होंने खम्भात पहुँच कर प्रातः काल की घेर लिया , जब वहाँ के काफिर निवासी सोए हुए थं । उनींदे नागरिकों की समझ में नहीं आया कि क्या हुआ ? भगदड़ में माताओं की गोद से बच्चे गिर पड़े । मुसलमान सैनिको ने इस्लाम की खातिर उस अपवित्र भूमि में क्रूरतापूर्वक मारना काटना प्रारम्भ कर दिया । रक्त की नदियाँ बह गयीं । उन्होनं इतना सोचा और चाँदी लूटा जो कल्पना से बाहर है ओर अनगिनत हीरें जवाहरात सच्चे मोत, लाल और पन्ने इत्यादि । अनेक प्रकार के छपे, रंगीन, जरीदार रेशमी और सूती कपड़े । (48)

उन्होंने बीस हजार सुंदरयुवतियों को और अनगिनत अल्पायु लड़के लड़कियों को पकड़ लिया । संक्षेप में कहें तो उन्होंने उस प्रदशे मे भीषण तबाही मचा दी वहाँ के निवासियों का वध कर दिया उनके बच्चों को पकड़ ले गए । मंदिर वीरान हो गए । सहस्रों मूर्तियाँ तोड़ डाली गयी । उनमें सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण सोमनाथ की मूर्ति भी उसके टुकड़े दिल्ली लाकर जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर बिछा दिए गए । जिसमसे प्रजा इस शानदार विजय के परिणामों को दखे और याद करे । (49)

रणथम्भौर पर आक्रमण के लिए अलाउद्दीन ने स्वयेप्रस्थान किया । जुलाई 1301 ई. में विजय प्राप्त हुई किले के अंदर तमाम स्त्रियाँ जौहर कर चिता में प्रवेश कर गयी । उसके बाद पुरुष तलवार लेकर मुस्लिम सेना पर टूट पड़े और कत्ल कर दिए गए । सभी देवी देवताओं के मंदिर ध्वस्त कर दिए गए । (49क)

अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में कुतुबमीनार से भी बड़ी मीनार बनाने का इरादा किया तो पत्थरों के लिए हिन्दुओं के मंदिरों तुड़वा दिया

गया । उस स्थान पर उन मंदिरों के पत्थरों से ही कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद का निर्माण भी किया जो आज भी शासन द्वारा सुरक्षित राष्ट्रीय स्मारको के रूप में मौजूद है ।

उज्जैन में भी सभी मंदिर और मूर्तियों का यही हाल हुआ । मालवाकी विजय पर हर्ष प्रकट करते हुएखुसरों लिखता है कि '' वहाँ की भूमि हिन्दुओं कें खून से तर हो गयी । (1(50))

चित्तौड़ के आक्रमण मं अमीर खुसरों के अनुसार इस सुल्तान ने 3000 हिन्दुओं को कत्ल करवाया । (51)

'' जो वयस्क पुरुष इस्लाम स्वीकार करनके से इंकार करते थे, इनकी कत्ल कर देना और शेष सबको, त्रियों और बच्चों समेत , गुलाम बना लेना साधारण नियम था । अलाउद्दीन खिलजी के 50000 गुलाम थे जिनमें अकधंकांश बच्चे थ। । फीरोज तुगलक के एक लाख अस्सी हजार गुलाम थे ।1(52)

अलाउद्दीन खिलजी के समय , जियाउद्दीन बरनी की दिल्ली का गुलाम मंडली के विषय मे की गयी टिप्पणी है कि आए दिन मंडी में नए नए गुलामों की टोलियाँ बिकने आती थीं । (53) दिल्ली अकेली ऐसी मंडी नहीं थी । भारत और विदेशों मं ऐसी गुलाम मंडियों कभ भरमार थी, जहाँ गुलाम स्त्री, पुरुष और बच्चे भेड़ बकरियों की भाँति बेचे और खरीदे जाते थे

अलाउद्दीन खिलजी ही क्यों, अकबर को छोड़कर, सम्पूर्ण मुस्लिम काल में, जो कैदी पकड़ लिए जाते थे, उनमें से जो मुसलमान बनने से इंकार कर देते थे , उन्हें वध कर दिया जाता था अथवा गुलाम बनाकर निम्न कोटि के कामों (पाखाना साफ करना इत्यादि) पर लगा दिया जाता था । शेष गुलामों को सेना और शासकों के बीच बाँट दिया जाता था । फालतू गुलाम मंडियों में बेच दिए जाते थे ।

जिन लोगों ने अमेरिका में गुलामों की दुर्दशा पर लिखा , विश्व विख्यात उपन्यास " टाम काका की कुटिया " पढ़ा होगा, उन्हें स्वप्न में भी

यह विचार नहीं आया होगा कि भारत में उनके पूर्वजों के साथ भी वही पशुवत व्यवहार हुआ है । गुलामों की मंडियों में बिकने वाले परिवारीजनों के एक दूसरे से बिछड़ने के सहस्रों हृदय विदारक दृश्य प्रतिदिन ही देखने को मिलते रहे होगे । पिता कहीं जा रहा है, तो पुत्र कहीं, माता कहीं और युवापुत्री कहीं किसी के विषय भोग की जीवित लाश बनकर, जो मन भर जाने पर , उसे कहीं और बेच देगा ।

मुस्लिमों का हिन्दू राजा से विश्वासघात

जब मलिक काफूर ने मालाबार पर आक्रमण किया तो वहाँ के यहाँ राजा के लगभग वीस हजार मुस्लिम सैनिक थे जो लम्बे समय से दक्षिण भारत में रह रहे थे, अपने राजा से विश्वासघात कर मुस्लिम सेना में जा मिले । (54)

विश्व इतिहास मुस्लिम सेनाओं द्वारा अपने गैर मुस्लिम शासकों के साथ छोड़कर मुस्लिम आक्रांताओं से जा मिलने की अनेक घटनाओं से भरा पड़ा है । दाहिर की मुस्लिम सेना हो या विजयनगर की, अथवा 1948 में काश्मीर की या काबुल मे रूस की, उनका वह व्यवहार सामान्य है और इसके विपरीत केवल अपवाद हैं । कारण यह है कि इस्लाम एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान का रक्त बहाने से अति कठोरतापूर्वक मना करता है ।

गुजरात में 1316 ई0 में मुस्लिम राज्य हो गया । इसका शासक वजीउल मुल्म धर्मान्तरित राजपूत मुस्लिम था । इस वंश ने वहाँ इस्लाम फैलाने का भंयकर प्रयास किया । अहमदशाह (1411–1442) ने बहुत लोगों का धर्मान्तरण किया । 1414 ई. मं उसने हिन्दुओं पर जिजिया कर लगाया और इतनी सख्ती से उसकी वसूली की कि बहुत से लोग मुसलमान हो गए । यह जिजिया अकबर के काल तक जारी रहा (1573) । अहमदशाह की प्रत्येक विजय के बाद धर्मान्तरण का बोलबाला होता था । 1469 ई. में सोरठ पर हमला किया गया और राजा के यह कहने पर कि वह राज्य कर लगातार समय से देता रहा है, महमूद बेगरा ने (1458–1511) ने उत्तर दिया कि " वह राज्य करने के लिए आया है और

न लूट के लिए । वह तो सोरठ में इस्लाम स्थापित करने आया है । राजा एक वर्ष तक मुकाबला , करता रहा, किन्तु अन्त में उसे इस्लाम स्वीकार करना पड़ा और उसे खानेजहाँ का खिताब दिया गया । " (55) उसके साथ अवश्य ही अनगिनत लोगों को करना पड़ा । 1473 ई. में द्वारिका पर आक्रमण के समय इसी प्रकार के धर्मान्तरण हुए । चम्पानेर पर आक्रमण के समय उसके राजपूत राजा पतई ने वीरतापूर्वक युद्ध किया, किन्तु पराजित हो गए । उसने इस्लाम स्वीकार करने से इंकार कर दिया और बर्बरतापूर्वक उसकी हत्या कर दी गयी । (56) 1486 ई. में उसके पुत्र को मुसलामन बनना पड़ा और निजामुलमुल्क का खिताब दिया गया । (57) डॉ. सतीश सी. मिश्रा के अनुसार जिन्होंने कि गुजरात के इतिहास का गहन अध्ययन यिका है, मुस्लिम आक्रमणकारियों की दो ही माँगे होती थीं : **भूमि और स्त्रियाँ** और अधिकतर वे इन दानों की चीजों को बलात छीन लेते थे ।

तुगलक सुल्तान

खिलजी वंशके पतन के पश्चात तुलकों ग्यासुद्दीन तुगलक (1320–25) मौहम्मद बिन तुगलक (1325–1351) एवं फिरोज शाह तुगलक (1351–1388) का राज्य आया ।

फिरोज तुगलक ने जब जाजनगर (उड़ीसा) पर हमला किया तो वह राज शेखर के पुत्र को पकड़ने में सफल हो गया । उसने उसको मुसलमान बनाकर उसका नाम शकर रखा । (62)

सुल्तान फिरोज तुगलक ने अपनी जीवनी **फतुहाल ए फिरोजशाही** मे लिखा है – मैं प्रजा को इस्लाम स्वीकारने के लिए उत्साहित करता था । मैनें यह घोषणा कर दी थी कि इस्लाम स्वीकार करने वाले लोगों पर जिजिया कर समाप्त कर दिया जाएगा ।

यह सूचना जब लोगों तक पहुँची तो लोग बड़ी संख्या में मुसलमान बनने लगे । इस प्रकार आज के दिन तक वह चहुँ ओर से चले आ रहे हैं । इस्लाम ग्रहण करने पर उनका जिजिया कर समाप्त कर दिया जाता है और उन्हें खिलअत तथा दूसरी वस्तुए भेंट की जाती हैं ।

1360 ई. में फिरोजशाह तुगलक ने जगन्नाथपुरी में मंदिर को ध्वस्त किया । अपनी आत्मकथा में यह सुल्तान हिन्दू प्रजा के विरुद्ध अपने अत्याचारों का वर्णन करते हुए लिखता है " जगन्नाथ की मूर्ति तोड़ दी गयी है और जगन्नाथ की मूर्ति के साथ मस्जिदों के सामने सुन्नियों के मार्ग में डाल दी गई जिससे वह मुस्लिमों के जूतों के नीचे रगड़ी जाती रहे । (63)

इस सुल्तान के यह आदेश थे कि जिस स्थान को भी विजय किया जाए, वहाँ जो भी कैदी पकड़े जाएं, उनमें से छाँटकर सर्वोत्तम सुल्तान की सेवा के लिए भेज दिए जाएं । शीघ्र ही उसके पास 180000 (एक लाख अस्सी हजार) गुलाम हो गए । (63क)

"उड़ीसा के मंदिरों तोड़कर फिरोजशाह ने समुद्र में एक टापू पर आक्रमण किया । वहाँ जाजनगर से भागकर एक लाख शरणार्थी स्त्री बच्चे इकट्ठे हो गए थे । इस्लाम के तलवारबाजों ने टापू को काफिरों के रक्त का प्याला बना दिया । गर्भवती स्त्रियों, बच्चों को पकड़ पकड़कर सिपाहियों का गुलाम बना दिया गया । (11(64))

नगर कोट कांगड़ा में ज्वालामुखी मंदिर का यही हाल हुआ ।फरिश्ता के अनुसार मूर्ति के टुकड़ों को गाया के गोशत के साथ तोबड़ों में भरकर ब्राह्मणों की गर्दनों से लटका दिया गया । मुख्य मूर्ति बतौर विजय चिन्ह के मदीना भेज दी गयी । (68)

मौहम्मद बिन हामिद खानी की पुस्तक तारीखे मौहमदी के अनुसार फिरोज तुगलक के पुत्र नसीरुद्दीन महमूद ने राम सुमेर पर आक्रमण करते समय सोचा कि यदि मैं सेना को सीधे सीधे आक्रमण के आदेश दे दूँगा तो सैनिक क्षेत्र में एक भी हिन्दू को जीवित नहीं छोड़ेगें । यदि मै धीरे धीरे आगे बढ़ूगां तो कदाचित वे इस्लाम स्वीकार करने को राजी हो जाएंगे ।

मालवा में 1454 ई. में सुल्तान महमूद ने हाड़ा राजपूतों पर आक्रमण किया तो उसने अनेकों का वध कर दिया और उनके परिवारों को गुलाम बनाकर माँडू भेज दिया । (67)

ग्यासुद्दीन (1469–1500) का हरम हिन्दू जमींदारों और राजाओं की सुंदर गुलाम पुत्रियों से भरा हुआ था । इनकी संख्या निजामुद्दीन के अनुसार 16000 (सोलह हजार) और फरिश्ता के अनुसार 10000 (दस हजार) थी । इनकी देशभाल के लिए सहस्रों गुलाम रहे होगें । (69)

दक्खन

प्रथम बहमनी सुल्तान अलाउद्दीन बहमन शाह (1347–1358) ने उत्तरी कर्नाटक के हिन्दू राजाओं पर आक्रमण किया । लूट में मंदिरों में नाचने वाली 1000 हिन्दू स्त्रियां हाथ आई । (69)

1406 में सुल्तान ताजुद्दीन फिरोज (1397–1422) ने विजय नगर के विरुद्ध युद्ध में वहाँ से 60000 (साठ हजार) किशोरों और बच्चों को पकड़ कर गुलाम बनाया । शांति स्थापित होने पर बुक्का राजा ने दूसरी भेंटों के अतिरिक्त गाने नाचने में निपुण 2000 (दो हजार) लड़के लड़कियाँ भेंट दी । (70)

उसका उत्तराधिकारी अहमद वली (1422–36) विजयनगर को एक ओर से दूसरी ओर तक लोगों का कत्ले आम करता, स्त्रियों और बच्चों को गुलाम बनाता, रौंद रहा था । सभी गुलाम मुसलमान बना लिए जाते थें । (71)

सुल्तान अलाउद्दीन (1436–48) ने अपने हरम में 1000 (एक हजार) स्त्रियाँ इकट्ठी कर ली थी । (72)

जब हम सोचते हैं कि बहमनी सुल्तानों और विजयनगर में लगभग 150 वर्ष तक युद्ध होता रहा तो कितने कत्ल हुए, कितनी स्त्रियाँ और बच्चे गुलाम बनाए गए और कितनों बलात् धर्मान्तरण किया गया उसका हिसाब लगाना कठिन हो जाला है ं(73)

बंगाल

बंगाल के डरपोक लोगों को तलवार के बल पर 13 वीं – 14 वीं शताब्दी में बड़े पैमाने पर मुसलमान बनाने का श्रेय (इस्लाम के) जोशीले सिपाहियों को जाता है जिन्होंने पूर्वी सीमाओं तक घने जंगलों में पैठ कर वहाँ इस्लाम के झंडे गाढ़ दिए । लोकोक्ति के अनुसार, इनमें सबसे

अधिक सफल थे, आदम शहीद, शाह जलाल मौहम्मद और कर्मफरमा साहब । सिलहट के शाह जलाल द्वारा बड़े पैमाने पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया । इस्माइल शाह गाजी ने हिन्दू राजा को पराजित कर बड़ी संख्या मं हिन्दुओं का धर्मान्तरण किया । (73क) इन नामों के साथ जुड़े गाजी (हिन्दुओं का कत्ल करने वाला) और शहीद (धर्म युद्ध में हिन्दुओं द्वारा मारे जाने वाला) शब्द से ही उनके उत्सह का अनुमान किया जा सकता है । " 1901 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार अनेक स्थानों पर हिन्दुओं पर भीषण अत्याचाचर किए गए । लोकगाथाओं के अनुसार मौहम्मद इस्माइल शाह गाजी ने हुगली के हिन्दू राजा को पराजित कर दिया ओर लोगों का बलात् धर्मान्तरण किया । (74)

इसी रिपोर्ट के अनुसार मुर्शिद कुली खाँ का नियम था कि जो भी किसान अथवा जमींदार लगान न दे सके उसको परिवार सहित मुसलमान होना पड़ता था । (75)

तैमूर शैतान

1399 ई. में तैमूर का भारत पर भयानक आक्रमण हुआ । अपनी जीवनी तुजुके तैमुरी में वह कुरान की इस आयत से ही प्रारंभ करता है ऐ पैगम्बर काफिरों और विश्वास न लानेवालों से युद्ध करो और उन पर सख्ती बरतो । वह आग` भारत पर अपने अ्रक्रमण का कारणबताते हुए लिखता है ।

हिन्दुतान पर आक्रमण करने का मेरा ध्येय काफिर हिन्दुओं के विरुद्ध धार्मिक युद्ध करना है जिससे इस्लाम की सेना को भी हिन्दुआ की दौलत और मूल्यवान वस्तुएँ मिल जाएं । (76)

काश्मीर की सीमा पर कटोर नामी दुर्ग पर आक्रमण हुआ । उसने तमाम पुरुषों को कत्ल और स्त्रियों और बच्चों को कैद करने का आदेश दिया । फिर उन हठी काफिरों के सिरों के मीनार खड़े करने का आदेश दिया । फिर भटनेर के दुर्ग पर घेरा डला गया । वहाँ के राजपूतों ने कुछ युद्ध के बाद हार मान ली और उन्हें क्षमादान दे दिया गया । किन्तु उनके असावधान होते ही उन आक्रमण कर दिया गया । तैमूर अपनी

जीवनी में लिखता है कि थोड़े ही समय में दुर्ग के तमाम लोग तलवार के घाट उतार दिए गए । घंटे भर में 10000 (दस हजार) लोगों के सिर काट लिए गए । इस्लाम की तलवार ने काफिरों के रक्त में स्नान किया । उनके सरोसामान, खजाने और अनाज को भी, जो वर्षों से दुर्ग में इकट्ठा किया गया था, मेरे सिपाहियों ने लूट लिया । मकानों में आग लगा कर राखा कर दिया । इमारतों और दुर्ग को भूमिसात कर दिया गया । (11(77))

दूसरा नगर सरसुती था जिस पर आक्रमण हुआ । सभी काफिर हिन्दू कत्ल कर दिए गए । उनके स्त्री और बच्चे और संपत्ति हमारी हो गयी । तैमूर ने जब जाटों के प्रदेश में प्रवेश किया । उसने अपनी सेना को आदेश दिया कि जो भी मिल जाए, कत्ल कर दिया जाए । और फिर सेना के सामने जो भी ग्राम या नगर आया, उसे लूटा गया । पुरुषों को कत्ल कर दिया गया और कुछ लोगों, स्त्रियों और बच्चों को बंदी बना लिया गया । (11(79))

दिल्ली के पास लोनी हिन्दू नगर था किन्तु कुछ मुसलमान भी बंदियों में थे । तैमूर ने आदेश दिया कि मुसलमानों को छोड़कर शेष सभी हिन्दु बंदी इस्लाम की तलवार के घाट उतार दिए लाए ं। इस समय तक उसके पास हिन्दू बंदियों की संख्या एक लाख हो गयी थी । जब यमुना पार कर दिल्ली पर आक्रमण की तैयारी हो रही थी उसके साथ के अमीरों ने उससे कहा कि इन बंदियों को कैम्प में नहीं छोड़ा जा सकता और इन इस्लाम के शत्रुओं स्वतंत्र कर देना भे युद्ध के नियमों के विरुद्ध है । तैमूर लिखता है –

इसलिए उन लोगों को सिवाय तलवार का भोजन बनाने के कोईमार्ग नहीं था । मैंने कैम्प में षोषणा करवा दी कि तमाम बंदी कत्ल कर दिए जाए और इस आदेश के पालन में जो भी लापरवाही करे उसे भी कत्ल कर दिया जाए और उसकी सम्पत्ति सूचना देने वाले को दे दी जाए । जब इस्लाम के गाजियों (काफिरों का कत्ल करने वालों को आदर सूचक नाम) को यह आदेश मिला तो उन्होंन तलवारो सूत लीं और अपने

बंदियों को कत्ल कर दयिा । इस दिन एक लाख अपवित्र मूर्ति पूजक काफिर कत्ल कर दिए कए । (78)

तुगलक बादशाह को हराकर तैमूर ने दिल्ली में प्रवेश किया । उसे पता लगा कि आसपास के देहातों से भागकर हिन्दुओं ने बड़ी संख्या मं अपने स्त्री बच्चों और मूल्यवान वस्तुओं के साथ दिल्ली में शरण ली हुई हैं ।

उसने अपने सिपाहियों को इन हिन्दुओं को उनकी संपत्ति समेत पकड़ लेने के ओदश दिए । तुमुके तैमुरी बताती है कि उनके से बहुत से हिन्दुओ ंने तलवारें निकाल लीं और विरोध किया । जहाँपनाह और सीरी से पुरानी देहली तक विद्रोहाग्नि की लपटें फैल गयीं । हिन्दुओं ने अपने घरों में आग लगा दी और अपनी स्त्रियों और बच्चों को उसमें भस्म कर युद्ध करने लिए निकल पड़े और मारे गए । उस पूरे दिन बृहस्पतिवार अ ौर अगले दिन शुक्रवार की सुबह मेरी सेना शहर में घुसगयी और सिवाय कत्ल करन, लूटने और बंदी बनाने के उसे कुछ और नहीं सूझा । शनिार 17 तारीख भी इसी प्रकार व्यतीत हुई और लूट इतनी हुई कि **हर सिपाही के भाग में 80 से 100 बंदी आए जिनमें आदमी और बच्चे सभी थे ।** फौज मं ऐसा कोई व्यक्ति न था जिसको 20 से कम गुलाम मिले हों । लूट का दूसरा सामान भी अतुलित था लाल, हीरे मोती, दूसरे जवाहरात, अशरफियाँ, , सोने, चाँदी के सिक्के, सोने , चाँ के बर्तन, रेशम और जरीदार कपड़े । स्त्रियों के सोने चाँदी के गहनों की कोइ र्गिनती संभव नहीं भी । सैयदों, उलेमाओ और दूसरें मुसलामनों के घरों को छोड़कर शेष सभी नगर ध्वस्त कर दिया गया । (11(79)) दया और भ्रातृत्व केवल मुसलमानों के लिए है ।

दूसरे सुल्तान

दिल्ली के सुल्तानों की हिन्दू प्रजा पर अत्याचारों में यदि कोई कमी रह गयी थी तो सूब ं के मुस्लिम गवर्नर उसे पूरी कर देते थे । सन् 1392 में गुजरात के सूबेदार मुजफ्फरशाह ने नवनिर्मित सोमनाथ के मंदिर को तुड़वा दिया और उसके स्थान पर मस्जिद बनवाई । बहुत से हिन्दू

मारे गए । हिन्दुओं ने फिर नया मंदिर बनाया । 1401 इ. में मुजफ्फर फिर आया । मंदिर तोड़कर दूसरी मस्जिद बनायी गयी । स. 1401 ई. में उसके पाते अहमद ने, जो उसके बाद गद्दी पर बैठा था, एक दरोगा इसी काम के लिए नियुक्त किया कि वह गुजरात के सभी मंदिरों को ध्वस्त कर डाले । हिन्दू मंदिर बनाते रहते थे, और मुसलमान तोड़ते रहते थें सन 1415 ई. में अहमद ने सिद्धपुर पर आक्रमण किया । रुद्र महालय की मूर्ति तोड़कर उस मंदिर के स्थान पर मस्जिद खड़ी की।सन् 1415 ई. में गुजरात के सुल्तान महमूद बघरा ने इन सभी से बाजी मार ली । उसके अधीन जूनागढ़ का राजा मंदालिका था जिसने कभी भी सुल्तान को निश्चित कर देने में ढील नहीं की थी । फिर भी सन् 1469 ई. में बघरा ने जूनागढ़ पर आक्रमण कर दिया । जब मंदालिका ने उससे कहा कि वह अपना निश्चित कर नियमित रूप से देता रहा है तो उसने उत्तर दिया कि उसे धन प्राप्ति मं इतनी रुचि नहीं है जितनी के इस्लाम के प्रचार में हैं । मंदालिका को बलपूर्व मुसलमानबनाया गया । (80) सन् 1472 ई. में महमूद ने द्वारिका पर आक्रमण किया । मंदिर तोड़ा और शहर लूटा । चंपानेर का शासक जयसिंह और उसका पुत्री इस्लाम कुबूल न करने पर कत्ल कर दिए गए । (71)

बंगाल के इलियास शाह ने (सन 1331 –79) नेपाल पर आक्रमण कर स्वयंम्भूनाथ का मंदिर ध्वस्त किया। (82) उड़ीसा में बहुत से मंदिर तुड़वाए और लूटपाट की ।

गुलबर्ग और बीदर के बहमनी सुल्तानप्रति वर्ष एक लाख हिन्दू पुरुषों , स्त्रियों और बच्चों का वध करना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते थे । दक्षिण भारत के अनेक मंदिर उनके द्वारा ध्वस्त कर दिए गए । (83)

इस प्रकार के खुले अत्याचारों से उत्पन्न भयानक आतंक से कितने हिन्दू शीघ्रतिशीघ्र मुसलमान हो गए होंगे, इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है ।

काश्मीर का इस्लामीकरण

(स्रोत : एन. के. जुत्शी द्वारा लिखित " सुल्तान जैनुल आब्दीन आफ काश्मीर "

काश्मीर प्रभावी इस्लामीकरण सुहादेव (1301—1320 ई.) के राज्य काल से प्रारंम्भ हुआ ।

भारतवर्ष ने सदैव उत्पीड़ित शरणार्थियों को शरण दी है । धर्म के नाम पर कभी आगन्तुकों से भेद भाव नहीं किया । पारसियों और यहूदियों ने हिन्दू भारत के इस आतिथ्य का दुरुपयोंग नहीं किया । परन्तु मसलमानों ने समय पड़ने पर इस्लाम की काफिर और कुफ्र विरोधी नीति के कारण एक दो अपवादों को छोड़ कर सदैव ऐसी नीति अपनाई जिससे भारत में इस्लाम की विजय हो और कुफ्र का नाश ं काश्मीर भी इस नीति का शिकार बना ।

1313 ई. मे ंशाहमीर नामक एक मुसलमान सपरिवार काश्मीर में आकर बसा।शााहमीर को हिन्दूराजा ने अपनी सेवा में नियुक्त कर उसे अंदर कोट का चार्ज सौंप दिया । लगता है कि यह परिवार पहले हिन्दू था ।

इसी समय में ज ब कश्मीर पर दुलाचा नामक मंगोल का भयानक आक्रमण हो चुका था , लद्दाख के एक राजकुमार रिनछाला ने लद्दाख से आकर अस्त व्यस्त काश्मीर पर कब्जा कर लिया । राजा सुहादेव भय के मारे किश्तवार भाग गया। रिनछाना ने काश्मीर में शांति स्थापित कर दी ।

बौद्ध रिनछाना हिन्दू बहुल काश्मीर के हिन्दू प्रजाजनों से अच्छे संबंध बनाने के लिए हिन्दू मत स्वीकार करना चाहता था , परन्तु देव स्वामी नामक मुख्य पुरोहित के विरोध के कारण यह संभव नहीं हो सका । हिन्दुओं से निराश होकर मुसलमानों को अपने पक्ष में करने के लिए उसने शाहमीर के समझाने कबुझाने से इस्लाम ग्रहण कर लिया ।

रिनछाना की मृत्यु के पश्चात अनेक षड्यंत्र रच कर शाहमीर न` गद्दी हथिया ली और सुल्तान शमसुद्दीन के नाम से 1331 ई. में सिंहासन पर बैठा । सिंहासन पर बैठते ही उसने काश्मीर में सुन्नी मुस्लिम सिद्धान्तों का प्रचार प्रारंभ कर दिया । 1342 ई. में शमसुद्दीन की मृत्यु हो गयी ।

और उसके दोनों पुत्रों में झगड़े प्रारम्भ हो गए । बड़े पुत्र जमशेद ने 1342 से 1344 तक राज्य किया और 1344 में उसका छोटा भाई अलीशेर सुल्तान अलाउद्दीन के के नामे से राज्य सिंहासन पर बैठा । उसने काश्मीर में गिरते नैतिक चरित्र की रोकथाम की, अनेक नए क्षेत्र विजय किए । 1355 ई. में सुल्तान अलाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात, उसका पुत्र सुल्तान शिहाबुद्दीन (1355–1373) गद्दी पर बैठा । शिहाबुद्दीन ने दंगा फसाद करने वालों को सख्ती से कुचल दिया ।

सुल्तान शिहाबुद्दीन की मृत्यु के पश्चात उसका भाई हिन्दाल सुल्तान कुतुबुद्दीन के नाम से गद्दी पर बैठा ।

अब तब अनेक विदेशों से भाग कर एि सैयदों ने काश्मीर में शरण लेली थी । उन्होंने मुगलों तथा तैमूर के आतंक एवं उत्पीड़न के कारण काश्मीर में प्रवेश किया था । उस समय फारस, ईराक, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान और भारत के अराजकता थी । काश्मीर में शान्ति थी । हिन्दू राज्यकाल में धार्मिक सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों में निरपेक्ष

नीति के कारण वे काश्मीर में आबाद हो गए । उन्होंने अपने और साथियों को बुलाया । सैयदों कीसंख्या बढ़ती गयी ।सैयद राजनीति में सक्रिय भाग लेते थे । वे सुल्तानों से विवाह संबंध बनाकर, काश्मीर के कुलीन समाज में उच्च स्थान प्राप्त करते गए । उनका प्रभाव बढ़ता गया । उन्होंने सुल्तानों पर नियंत्रण करना प्रारंभ कर दिया । विदेशी सैयदों के प्रभाव एवं प्रोत्साहन से हिन्दुओं पर अत्याचार हुए। उन्हें मुसलमान बनाने की सुनिश्चित योजना बनायी गयी । सैयदों ने इसमें सक्रिय भाग लिया । सभी साधनों का प्रजो काश्मीर के इस्लमीकरण में किया गया ।

फलस्वरूप सुल्तान कुत्बुद्दीन (1373 – 1389) के राज्य काल में इस्लाम का बहुत प्रसार हुआ । इसके समय में ही सैयद अली हमदानी नामी सूफी ईरान से यहाँ आया । इसके प्रभाव में आकर सुल्तान ने हिन्दुओं के धर्मान्तरण में बड़ी रुचि ली । सादात लिखित बुलबुलशाह के अनुसार इस सूफी के प्रभाव से 37000 हिन्दू मुमसलमान बने ।

कुत्बुद्दीन के पुत्र सिकन्दर बुतकिशन ने (1389 – 1413) विदेशी सूफी मीर अली हमदानी , सहभट्ट सैयदों तथा मूसा रैना ने इराक देशीय मीर शमशुद्दीन की प्ररण पर हिन्दुओं पर अत्याचार एवं उत्पीड़न किया । सिकन्दर बुतशिकन के समय समस्त प्रतिमाएँ भंग कर दी गयी थी । हिन्दू जबर्दस्ती मुसलमान बना लिए गए थे। इस सुल्तान के विषय में कल्हण राज तरंगिणी में लिखता है –

सुल्तान ने अपने तमाम राजसी कर्तव्यों को भुलाकर दिन रात मूर्तियों तोड़ने का आनन्द उठाता रहता था । उसने मार्तण्ड, विष्णु, ईशन, चक्रवर्ती और त्रिपुरेश्वर की मूर्तियाँ तोड़ डालीं । कोई भी बन, ग्राम, नगर तथा महानगर ऐसा न था जहाँ तुरुष्क और उसके मंत्री सुहा ने देव मंदिर तोड़ने से छोड़ दिए हों । (84) सुहा हिन्दू था जो मुसलमान हो गया था ।

सिकन्दर के पश्चात उसका पुत्र मी खां अली शाह के नाम से द्दी पर बैठा ।

अलीशाह

सिकन्दर के प्रधानमंत्री सुहा ने इस सुल्तान के समय ब्राह्मणों पर फिर अत्याचार प्रारम्भ कर दिए । उनके धार्मिक अनुष्ठान और शोभा यात्राओं पर पाबंदी लगा दी । ब्राह्मण इतने दरिद्र हो गए कि उनको कुत्तों की तरह भोजन के एिल दर दर भटकना पड़ने लगा । अपने धर्म की रक्षा और अत्याचार से बचने के लिए बहुतों ने काश्मीर से भागने के प्रयास किए । (85)

कहा गया है कि काश्मीर में केवल 11 ब्राह्मण परिवार ही बच पाए जो राज्य सहमति के अभाव में भाग नही सके । उनमेंसे बहुतों ने आग में कूटकर, विष द्वारा, व फांसी लगाकर अथवा पहाड़ से कूदकर आत्महत्या कर ली । सुहा का कहना था कि वह तो केवल इस्लाम के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहा था ।

बाबर (1519–1530)

मुसलमान बादशाहों में बाबर का नाम भारत में उसके द्वारा सबसे स्थायी मुगल साम्राज्य स्थापित करने का श्रेय प्राप्त होने के कारण प्रसिद्ध

रहा है । रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद विवाद के कारण यह नाम बच्चे बच्चे की जुबान पर है । मुसलमानों के लिए तो उनके धर्मानुसार जितना ही काफिर कुश कोई सुल्तान रहा हो उतना ही अधिक उनकी श्रद्धा और आदर का पात्र होगा । किन्दु आश्चर्यजनक बवात यह है कि हमारे कुछ आधुनिक विद्वान भी धर्म निरपेक्षता का प्रमाण पत्र पाने की होड़ में उसे एक धर्मनिरपेक्ष और हिन्दू तथा हिन्दू मंदिरों के प्रति सहानुभूति रखने वाला मजहबी कट्टरता से ऊपर सहृद्य बादशाह प्रमाणित करने में एड़ी चोटी का जोर लगाते फिरते हैं ।

ऐसे विद्वानों का दुर्भाग्य है कि बाबर स्वरचित तुजुके बाबरी में अपनी जीवन और विचारों का लेखा जेखा छोड़ गया है । उसके जीवन चरित्र में अयोध्या काल के कुछ पृष्ठ नही मिलते । हिन्दुओं मे पढ़न` लिखने का प्रचलन कम है । इसलिए उनकी अज्ञानता का लाभ उठाकर कुछ भी कहा जा सकता है । उसका आत्मचरित्र **तुजुके बाबरी जिसका बेवरिज द्वारा किया गया अग्रेजी अनुवाद** भारत में सहज ही उपलब्ध है, बाबर के जीवन का प्रमाणि क ग्रंथ है –

स्वयं अपने कथन क`अनुसार बाबर भारत में हिंदुओं की लाखों के पहाड़ लगाकर हर्षातिरेक से गुनगुना उठता है :–

निकृष्ट और पतित हिन्दुओं का वध कर,
गोली और पत्थरों से बना दिए मृत देहों के पर्वत,
गजों के ढेर जैसे विशाल ।
और प्रत्येक पर्वत से बहती रक्त की धाराएँ । हमारे सैनिकों के तीरों से भयभीत,
पलायन कर छिप गए कुन्जों और कंदराओं में ।
इसलाम के हित घूमता फिरा मैं बनों में,
हिन्दू और काफिरों से युद्ध की खोज में ।
इच्छा थी बनूँगा इस्लाम का शहीद मैं
उपकार उस खुदा का बन गया गाजी ।

यह कोरी कल्पनानहीं है । वह अपने प्रत्येक युद्ध के पश्चात हिन्दू युद्धबंदियों के सिरों को एक एक कर काटे जाने का रोमांचक दृश्य शराब की चुस्कियों के बीच देंखता है । फिर उन सिरों की मीनारें खड़ी करवाता हे । वह लिखता है कि एक बार उसे अपना डेरा तीन बार ऊँचे स्थान पर ले जाना पड़ा, क्योंकि भूमि पर खून ही खून भर गया था । बाबर का दुर्भाग्य था कि उसके पूर्व के सुल्तानों ने उसके तोड़ने के लिए बहुत मंदिर छोड़े ही नही थे । सोने की मूर्तियों का स्थान पहले पीतल और फिर पत्थर की मूर्तियों ने ले लिया था । बाबर को भारत भूमि इतनी शुष्क और अप्रिय लगती थी कि उसने मृत्योपरान्त वहाँ दफन होना भी पसन्द नहीं किया । अफगानिस्तान में उसका टूटा फूटा मकबरा है । कहा जाता है कि मुस्लिम देश अफगानिस्तान के मुसलमान बाबर को एक विदेशी लुटेरा समझकर उसके मकबरे का रखरखाव नही करवाते । उनके लिए वह आदर का पात्र नहीं है । वह फरगना का रहने वाला दुष्ट विदेशी था जिसने उनके दश को पद दलित किया थां अरब में सड़क चौड़ी करने के लिए मस्जिदें तक हटा दी गयी ळैं किन्तु भारत के मुसलान, पठानों, अरबों जैसे दूसरी श्रेणी के मुसलमान नहीं हैं वह विदेशी आक्रमणकारियों बाबद, मौहम्मद बिन कासिम, गौरी, गजनवी इत्यादि लुटेरों को और औरगजेब जैसे साम्प्रदायिक बादशाह को गौरव प्रदान करते हैं और उनके द्वारा मंदिरों को तोड़कर बनायी गयी मस्जिदों व दरगाहों को इसलाम की काफिरों पर विजय और हिन्दू अपमानके स्मृति चिन्ह बनाए रखना चाहते हैं जिससे हिन्दू अतीत में दीनदारों द्वारा प्रदर्शित इस्लाम की कुव्वत को न भूल जायें । और हम हिन्दू, कानून में विश्वास करने वाले, सुसंस्कृत , उदार, धर्मनिपेक्ष भले ालेग प्रमाणित होना पसंद करते हैं इसलिए हमारी सरकार इन लोदियों, मुगलों , पठानों, खिलजियों और गुलामों के मकबरों के रखरखाव पर करोड़ों रुपया , जो वह मुख्यतया हिन्दुओं से वसूलती है, प्रतिवर्ष खर्च करती है ओर उन बर्बर आक्रान्ताओं द्वारा अपने मंदिरों को अपवित्र और तोड़कर उनके स्थान पर बनायी गयी मस्जिदों को इस देश की संस्कृति की धरोहर बताकर फौज पुलिस बैठाकर उनकी रक्षा करती है

। संसार में क्या कोई ऐसा आत्म सम्मानहीन दूसरा दशे और समाज देखने को मिलेगा ?

शेरशाह सूरी (1540–1545)

यह सत्य है कि यह बादशाह विशेषरूप से हिन्दुओं पर अत्याचार करने के लिए नहीं निकलता था किन्तु अवसर पड़ने पर उसका व्यवहार इस विषय में दूसरे मुस्लिम सुल्तानों से भिन्न नहीं था । अवसर आने पर उसने इस्लाम को शिकायत का मौका नहीं दिया ।

शेख नुरुल हक जुवादुतुल तवारीख में कहता है कि 950 हिजरी में पूरनमल रायसेपन दूर्ग का स्वामी था । उसके हरम में 1000 स्त्रियाँ थीं । उनमें कुछ मुसलमान भी थीं । शेर खाँ ने इस पर मुसलमानी क्षोभ के कारण दुर्ग विजय करने का निश्चय किया । हिन्दुतु जब कुछ समय तक यह संभव नहो सका तो पूरनमल के साथ संधि कर ली । उसके पश्चात् उसके पूरे कैम्प को (जो संधि के कारण बेखबर था) हाथियों द्वारा घेर लिया गया । राजपूतों ने अपनी स्त्रियों और बच्चों को आग में झोंक दिया और प्रत्येक पुरुष युद्ध करते हुए मारा गया । (76)

हुमायुँ (1520–1556)

हुमायुँ को शेरशाह सूरी ने अपदस्थ कर दिया । वह भारत में जान बचाता घूम रहा था । उसके अपने भाई और मुसलमान सरकारें उसके विरोधी हो रहे थे । उस कठिन समय में उसको कालिंजर पति जैसे कुछ हिन्दू राजाओं ने सहायता दी । मुसलमान इतिहासकार लिखते है कि बादशााह ने गुजरात के नवाब सुल्तान बहादुर पर आक्रमण करने की ठानी । ..... जब हुमाय्रूँ वहाँ पहुँचा तो सुल्तान चित्तौड़ पर घेरा डाले पड़ाथा । हमायुँ के आक्रमण का समाचार सुनकर युद्ध की सभा विचार विमर्श के लिए सुल्तान द्वारा बुलाई गयी । बहुत से अफसरों ने तुरन्त घेर उठाकर हुमायूँ का सामना करने की सलाह हदी । किन्दु सदर खाँ ने, जो उमराओं का सदरथा, कहा कि (चित्तौड़) में हम काफिरों से युद्ध कर रहे हैं ऐसे समय में यदि कोइ मुसलमान बादशााह हम पर आक्रमण कर दे तो उस पर इस्लाम के विरुद्ध कुफ्र को सहायता देने का पाप

लगेगा । । उसके माथे पर कलेक कयामत के दिन तक लगा रहेगा । इसलिए बादशाह हम पर आक्रमण नहीं करेगा । आप चित्तौडत्र पर आक्रमण जारी रखिए । जब हुमायुँ को पता लगा तो वह मार्ग में ही सारंगपुर में ठहर गया । सुल्तान बहादुर ने चित्तौड़ फतह कर यिला । उसके पश्चात हुमायुँ ने उससे युद्ध किया । (87)

हुमायुँ जैसा बादशाह भी , जो उन दिनों हिन्दू राजाओं के रहमों करम पर जीवित था, हिन्दुओं के विरुद्ध , मुसलमान शत्रुओं को सहायता देने से बाज नहीं आया । प्रो. एस. आर. शर्मा अपनी पुस्तक क्रीसेंट इन इंडिया में इस घटना को हुमायुँ की मूर्खता बताते हैं । यह उसकी मूर्खता नही थी, उसकी धार्मिक मजबूरी थी ।

भारत के कुछ धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार और विद्वान यह प्रचार करते हैं कि महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण केवल लूटपाट के लिए किए थे । यह धार्मिक युद्ध नहीं थे । प्रमाण स्वरूप कहते हैं कि उसने स्वयं खलीफा पर आक्रमण करने की धमकी दी थी । यदि वह धर्मान्ध व्यक्ति होता तो खलीफा पर आक्रमण करने बात सोच भी नहीं सकता था ।

हुमायुँ के उपरोक्त व्यवहार से उनके इस तर्क का समुचित उत्तर मि ल जाता है । दो मुस्लिम शासको ं के परम्परिक मन मुटाव का यह अर्थ नहीं है कि वह काफिरों के प्रति भी धर्मनिपेक्ष थे अथवा काफिरों के विरुद्ध युद्ध करना धार्मिक कर्त्तव्य नहीं समझते थे ।उनमें आपस में कितना ही विरोध हो, कितनाही युद्ध होता हो, काफिरों के विरुद्ध युद्ध अथवाकाफिर कुशी , करने उनकी संस्कृति को मिटाने में वह सब एक हैं क्योंकि यह उनका धार्मिक कर्तव्य है । सर सैयद अहमद की पुस्तक **अथारुये सनादीद** से ही की इस्लामी प्रतिबद्धता कादूसरा प्रमाण मिलता है । वह लिखता है कि नदी के किनारे जहानाबाद नगर के उत्तर पूर्व में एक घाट है । इसके विषय मं कहा जाता है सम्राट युधिष्ठिर ने यहाँ यज्ञ किया था । उस स्थान पर हिन्दओं न एक विशाल छत्री का (मंदिर) का निर्माण किया था । यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हुमाँयु ने उस

मंदिर को तुड़वाकर उसके स्थान पर नीली मस्जिद का निर्माण करवा दिया । (11(88))

क्या वास्तव में मुस्लिम विद्वान महमूद गजनवी को लुटेरा मात्र समझते हैं ? या इस्लाम का मिशनरी मान कर उस पर गर्व करते है? ताज एण्ड कम्पनी, 3151 तुर्कमान गेट दिल्ली, ने मुस्लिम बच्चों के लिए प्रोफेसर फजल अहमद द्वारा लिखित **हीरोज ऑफ इस्लाम** नामक एक पुस्तकों की श्रृखंला प्रकाशित की है । इसमें महमूद गजनवी को भारत के हृद्‌य तक इस्लाम का ध्वज पहुँचाने के लिए उसके मुस्लिम मिशनरी उत्साह की प्रशंसा के पुल बाँधे गए हैं । उत्सुक पाठकों को पूरी सीरीज पढ़नी चाहिए । उसमें इस्लाम के दूसरे आदर्श पुरुष, मौहम्मद बिन कासिम, टीपूसुल्तान और औरंगजेब हैं, अकबर, दारा और जैनुलआबदीन नहीं ।

अकबर महान (1556–1605)

अकबर का शासन भी इसी इस्लामी उन्माद से प्रारम्भ हुआ । किन्तु धीरे धीरे उसकी यह बात समझ में आ गयी कि भारत में चैन से राज्य करना है तो मुसलमान अमीरों का भरोसा छोड़कर हिन्दुओं का , विशेष रूप से राजपूतों का सहयोग और मित्रता प्राप्त करनी होगी । जहाँ मुसलमान अमीर अपने स्वार्थवश होकर शासन के विरुद्ध मंत्रणा करते रहते थे, राजपूतों के शौर्य और स्वामिभक्ति पर अकबर मुग्ध हो गया था। किन्तु यह बाद की बात है । 1568 ई. में अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया । अबुल फजल अपने अकबरनामें में इस घटना का वर्णन करते हुए लिखते हैं – दुर्ग में राजपूत योद्धा थे किन्‍ु लगभग 40000 ग्रामीण थे जो केवल युद्ध देखने और वहाँ पर दूसरे काम के लिए एकत्रित थे । विजय के पश्चात् प्रातः काल से दोपहर तक महायोद्धा अकबर की तेजस्विता में ये अभागे लोग भस्म होते रहे । लगभग सभी आदमी कत्ल कर दिए गए । (71)

यह क्रूरता और सभ्य लोगों के युद्ध नियमों उल्लंघन, अकबर के माथे पर कलंक है जो कभी नही छूटा । छूटेगा भी नही ।

अकबर ने राजपूतों से विवाह संबंध बनाने के प्रयत्न किए क्योंकि इस रिश्ते से ही वह उन्हें स्थायी रूप से अपनी ओर मिल सकता था। किन्तु राजपूत तों आपस में छोटे बड़े वर्गों में बँटे थे । उच्च वंश के राजपूत नीचे वंश के राजपूत को अपनी बेटी नहीं देते थे , फिर तुर्क को कैसे दें ?

अकबर ने राजपूतों से कहा भी वह बाहदशाह है और अपने देश से बहुत दूर है । इसलिए न तो वहाँ से शहजादियों को विवाह कर ला सकता है और न अपनी शहजादियों को वहाँ ब्याह सकता है । इसलिए आप लोग, जो यहाँ राजा हैं हमारी शहजादिउयाँ लें और हमें अपनी शहजादियाँ दें । हिन्तु राजपूत, मुगल शहजादियाँ लेने को , अपने धर्म खो देने के भय से, तैयार नहीं हुए । (90) कभी भय और कभी लोभ से, अपनी बेटियाँ मुगलों कोदेने को मजबूर हो गए । अकबर के काल में कम से कम 39 (उन्तालीस) राजकुमारियाँ शाही खानदान में ब्याही जा चुकी थी । 12 अकबर को, 17 शाहजादा सलीम को, छः दानियाल को, दो मुराद को और एक सलीम के पुत्र को । (90क)

जहाँगीर (1605—1627)

किन्तु जहाँगीर ने गद्दी प्राप्त करते ही अपने पिता अकबर महान की नीतियाँ बदल डालीं । वह आलसी, क्रूर और अत्यधिक शराबखोरी, अफीम खोरी जैसे दुर्व्यसनों में लिप्त था । जहाँगीर की परिस्थितियों और उसकी प्रकृति ने , उसे मुल्लाओं की गोद मं जा बैठने के लिए मजबूर किया । उसने सिक्ख गुरु अर्जुन देव का क्रूरतापूर्वक वध करवाया । कांगड़ा के हिन्दू दुर्ग पर जितय प्राप्त करने पर उसने वहाँ के मंदिर में गाय कटवा कर उसको अपवित्र किया। वह अपनी आत्म कथा तुजुके जहाँगीरी में इन क्रूर कर्मों पर गर्व करता है । (91)

शाहजहाँ (1627 — 1658)

शाहजहाँ के आते आते मुगल शासन पुराने मुसलमानी ढर्रे पर चल पड़ा था । उसके इतिहासकार अब्दुल हमीद लाहौरी के बादशाहनामे के अनुसार शाहजहाँ के ध्यान में यह बात लाई गयी कि पिछले शासन में

बहुत से मूर्ति मंदिरों का निर्माण प्रारंभ किया गया था किन्तु कुफ्र के गढ़ बनारस में बहुत से मंदिरों के निर्माण का कार्य पूरानहीं हुआ था । काफिर उनको पूरा करनाचाहते थे । धर्म के रक्षक बादशाह सलामत ने आदेश दिया कि बनारस और उसके पूरे साम्राज्य में तमाम नए मंदिर ध्वस्त कर दिए जाए । इलाहाबाद के सूबे से सूचना आइै कि बनारस में 76 मंदिर बिरा दिए गए हैं । यह घटना सन्1633 की है ।

सन् 1634 ई. में शाहजहाँ के सैनिको ने बुन्देलखंड के राज जुझारदेव की जो जहाँगीर के कृपा पात्रों में था, रानियों, दोपुत्रों एक पौत्र और एक भाई को पकड़कर शाहजहाँ के पास भेजा । शाहजहाँ ने दुर्गाभान और दुर्जनसाल नामक अवयस्क एक पुत्र और पौत्र को बलात् मुसलामन बनवाया । एक वयस्क पुत्र उदय भान और भाई श्यामदेव का, इस्लाम स्वीकार न करने के कारण, वध करवा दिया । रानियों को हरम में भेज दिया गया ं (92)(गुलामी के लिए अथवा व्यभिचार के लिए)

इस मुस्लिम व्यवहार के विपरीत दुर्गादास राठौर ने औरंगजेब की पौत्री सफीयुतुन्निसा और पौत्र बुलन्दअख्तर को जिन्हें औरंगजेब का पुत्र शाहजहाँ का पौत्र शाहजादा अकबर उसके सरंक्षण में छोड़ गया था, नियमानुसार इस्लाम की शिक्षा दिलाकर, सम्मानपूर्वक औरंगजेब को 13 वर्ष के बाद जब वह जवान हो गए थे, वापिस कर दिया । (93) यह इस्लाम और हिन्दू धर्म की शिक्षा के कारण हुआ । यह दो ऐतिहासिक उदाहरण हिन्दू और मुसलमान मानसिकता के अंतर पर प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त हैं ।

अकबर ने उन किसानों के परिवारों को गुलाम बनाने और बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया था, जो सरकारी लगान समय से नहीं दे पाए थे । शाहजहाँ ने इस प्रथा को फिर चालू कर दिया । किसानों को लगान देने के लिए अपनी स्त्रियों और बच्चों को बेचन पर मजबूर किया जाने लगा । (94)

मनुक्की के अनुसार किसानो को बलात् पकड़ कर (गुलामी में) बेचने के लिए मंडियों और मेलों में ले जाया जाता था । उनकी अभागी स्त्रियाँ अपने छोटे छोटे बच्चों को लिए रुदन करती चली जाती थी । (98)

काजबीनी के अनुसार शाहजहाँ के आदेश थे कि इन हिन्दू गुलामों को हिन्दुओं के हाथ न बेचा जाए (11(96)) मुसलमान मालिको के पास गुलामों का अन्ततः मुसलमान हो जाना निश्चित था ।

औरंगजेब (1658–1707)

इस बादशााह के हिन्दुओं पर अत्याचारों पर एक अलग ही पुस्तक लिखी जा सकती है । नमूने के तौर पर उसके कुछ कारनामों क संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :

अनेक लोग जो मुसलमान बनने को तैयार नहीं हुए, नौकरी से निकाल दिए गए । नामदेव को इस्लाम ग्रहण करनेपर 400 का कमाण्डर बना दिया गया और अमरोहे के राजा किशनदास के पोते शिवसिंह को इस्लाम स्वीकार करने पर इम्तियाज गढ़ का मुशरिफ बना दिया गया । समाचार पत्रों में नेराम के धर्मान्तरण का जो राजा बना दिया गया और दिलावार का, जो 10000 का कमाण्डर बना दिया गया का वर्णन है (97) के. एस. लाल अपनी पुस्तक **इंडियन मुस्लिम व्हूआर दे** में अनेकों उदाहरण देकर सिद्ध करते है कि इस प्रकार के लोभ के कारण और जिजिया कर से बचने के लिए बड़ी संख्याम ें हिन्दुओं का धर्मान्तरण हुआ ।

हिन्दू ग्रहस्थों और रजवाडो की लड़कियाँ किस प्रकार बलात् उठाकर गुलाम रखैल बना ली जाती थी , उसका एक उदाहरण मनुक्की की आँखों देखा अनुभव है ं वह नाचने वाली लड़कियों की एक लम्बी सूची देता है जैसे हीरा बाई, सुन्दर बाई, नैन ज्योति बाई, चमेली, एलौनी , मधुमति, कोयल, मेंहदी, मोती, किशमिश, पिसता इत्यादि । वह कहता है कि ये सभी नाम हिन्दू और साधारणतया वे हिन्दू हैं जिनको बचपन में विद्रोही हिन्दू राजाओं घरानों मे से बलात उठा यिला गया था । नाम हिन्दू जरूर है, अब पर वे सब मुसलमान है । (97क)

मराठों के जंजीरा के दुर्ग को जीतने के बाद सिद्दी याकूब ने उसके अंदर की सेना को सुरक्षा का वचन दिया था । 700 व्यक्ति जब बाहर आ गएतो उसनेसब पुरुषों कत्ल कर दिया । परन्तु स्त्रियों और बच्चों गुलाम बनाकर उनके मुलमान बनने पर मजबूर किया । (97ख)

औरंगजेब के गद्दी पर आते ही लोभ लालच बल प्रयोग द्वारा धर्मान्तरण के भीषण रूप धारणकिया । अप्रैल 1667 में चार हिन्दू कानूनगो बरखास्त किए गए । मुसलमान हो जाने पर वापिस ले लिए गए । (98) औरंगजेब की घोषित नीति थी कानूनगो बशर्ते इस्लाम अर्थातॅ मुसलामन बनने पर कानूनगोई (99)

पंजाब से बंगाल तक , अनेक मुस्लिम परिवारों में ऐसे नियुक्ति पत्र अब भी विद्यमान हैं जिनसे यह नीति स्पष्ट सिद्ध होती है । नियंक्तियों और पदोन्नतियों दोनो क`द्वारा इस्लाम स्वीकार करने का प्रलोभन दिया जाता था । (100)

सन् 1648 ई. में जब वह शहजादा था, गुजरात में सीताराम जौहरी द्वारा बनवाया गया चिन्तामणि मंदिर उसने तुड़वाया । उसके स्थान पर कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद बनवाई गयी और वहाँ एक गाय कुर्बान की गयी । (101)

सन् 1648 ई. मे मीर जुमला को कूच बिहार भेजा गया । उसने वहाँ के तमाम मेंदिरों का`तोड़कर उनके स्थान पर मस्जिदें बना दी । (102)

सन् 1666 ई. में कृष्ण जन्मभूमि मंदिर मथुरा में दारा द्वारा लगायी गयी पत्थर की जाली हटाने का अदेश दिया । इस्लाम में मंदिर को देखना भी पाप है और इस दारा ने मंदिर में जाली लगवाई । (103)

सन् 1699 ई. में ठट्टा , मुल्तान और बनारस मं पाठशाालाएँ और मंदिर तोड़ने के आदेश दिए । काशी में विश्वनाथ का मंदिर तोड़ा गया और उसके स्थान पर मस्जिद का निर्माण किया गया । (104)

सन् 1670 ई. में कृष्ण जन्मभूमि मंदिर, मथुरा तोड़ा गया । उस पर मस्जिद बनाई गई ।मूर्तियाँ जहाँनारा मस्जिद, आगरा की सीढ़ियों पर बिछा दी गयी । (105)

सोंरो में रामचन्द्र जी का मंदिर, गोंडा में देवी पाटन का मंदिर , उज्जैन के समस्त मंदिर, मेदनीपुर बंगाल के समस्त मंदिर तोड़े गए । (106)

सन् 1672 ई. में हजारों सतनामी कत्ल कर दिए गए । गुरु तेग बहादुर का काश्मीर के ब्राह्मणों के बलात् धर्म परिवर्तन का विरोध करने के कारण वध करवाया गया । (107)

सन् 1679 ई. में हिन्दुओं पर जिजियि कर फिर लगा दिया गया जो अकबर ने माफ कर दिया था । दिल्ली में जिजिया के विरोध में प्रार्थना करनेवालों को हाथी से कुचलावाया गया । खंडेला में मंदिर तुड़वाये गये । (108)

जोधपुर से मंदिरों की टूटी मूर्तियोंसे भरी कई गाड़ियाँ दिल्ली लाई गयीं और उनको मस्जिदों की सीढ़ियों पर बिछाने के आदेश दिए गए । (109)

सन् 1680 ई. मे उदयपुर के मंदिरों को नष्ट किया गया । 172 मंदिरों को तोड़ने की सूचना दरबार में आई ं। 62 मंदिर चित्तौड़ में तोंड़े गए । 66 मंदिर अम्बेर में तोड़े कए । सोमेश्वर का मंदिर मेवाड़ में तोडत्रा गया । सतारा में खांडेराव का मंदिरा तुड़वाया गया । (11(10))

सन् 1690 ई. में एलौरा, त्रयम्बकेश्वर, नरसिंपुर सवं पंढरपुर के मंदिर तुड़वाए गए । (111)

सन् 1698 ई0 में बीजापुर के मंदिर ध्वस्त किए गए । उन पर मस्जिदें बनायी गयी । (112)

प्रो0 मौहम्मद हबीब के अनुसार 1330 ई0 मे ंमंगोलों ने आक्रमण किया । पूरी काश्मीर घाटी में उन्होंने आग लगाने बलात्कार और कत्ल करने जैसे कार्य किए । राजा और ब्राह्मण (शिक्षक) तो भाग गए ।

परन्तु साधारण नागरिक, जो रह गए, दूसरा कोई विकल्प नदेखकर धीरे धीरे मुसलमान हो गए । (113)

इस प्रकार युद्ध से कैदी प्राप्त होते थे । कैदी गुलाम और फिर मुसलमान बना लिए जाते थें । नए मुसलमान दूसरे हिन्दुओं की लूट, बलात्कार और बलात् धर्मान्तरण में उत्साहपूर्वक लग जाते थे, क्योंकि वह अपने समाज द्वारा घृणित समझे जाते थे॰ मुस्लित इतिहासकारों द्वारादी गयी उपरोक्त घटनाओं के विवरणका` पढ़कर जिनके अनेक बार वे प्रत्यक्ष दशी थे, किसी भीमनुष्य का मन अपने अभागे हिन्दू पूर्वजों के प्रति द्रवित होकर करुणा से भर जाना स्वाभाविक है । हमारे धर्मनिरपेक्ष शासेको द्वारा बहुधा प्रशंसित धर्मनिरपेक्ष अमीर खुसरों अपनी मसनवी में लिखता है :

जहाँ रा कदीम आमद ई रस्मो पेश :
कि हिन्दहू बुवद सैदे तुर्का हमेश ।
अर्जी बेह मद् निस्बते तुर्की हिन्दू
कि तुर्कस्त चूँशेर, हिन्दू चु आहू॰
जे रस्में कि रफतस्त चर्खे रवां रा
बुजूद अज पये तुर्क शुदं हिन्दुऑरा ।
कि तुर्कस्त गालिब बरेशां चूँ कोशद
कि हम गीरदोहम खरद फरोशद ।

अर्थात् संसार का यह नियम अनादिकाल से चला आ रहा है कि हिन्दू सदा तुर्कों का शिकार रहा है । तुर्क और हिन्दू का संबंध इससे बेहतर नहीं कहा जा सकता है कि तुर्क सिंह के समान है और हिन्दू हिरन के समान ।

आकाश की गर्दिश से यह परम्परा बनी हुर्अ है कि हिन्दुओं का अस्तितत्व तुर्कों के लिए ही है ।

क्यांकि तुर्क हमेशा गालिब होता है और यदि वह जरा भी प्रयत्न करें तो हिन्दू को जब चाहे पकड़े, खरीदे याबेचे ।

यह संसार का अद्भुत आश्चर्य ही है कि इस्लाम के जिस आतंक से पूरा मध्य पूर्व और मध्य एशिया कुद दशााब्दियों में ही मुसलमान हो

गया वह 1000 वर्ष तक पूरा बल लगाकर भारत की आबादी के केवल 1/5 भाग ही धर्म परिवर्तन कर सका ।
इन बलात धर्म परिविर्तत लोगों में कुछ ऐसे भी थे जोउपनी संतानों के नाम एक लिखित अथवा अलिखित पैगाम छोड़ गए – हमने स्वेच्छा से अपने धर्म का त्याग नहीं किया है ।यदि कभी ऐसा समय आवे जब तुम फिर अपने धर्म में वापिस जा सहो तो देर मत लगाना । हमारे ऊपर हिकए गए अत्याचारों को भी भुलाना मत ।

बताया जाता है कि जम्मू में तो एक ऐसा परिवार है जिसके पास ताम्र पत्र पर खुदा यह पैगाम आज भी सुरक्षित है । किन्तु हिन्दू समाज उन लाखों उत्पीड़ित लोगों की आत्माओं की आकांक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ रहा है । काश्मीर के ब्राह्मणों जैसे अनेक दृष्टांत है जहाँ हिन्दुओं ने उन पूर्वकाल के बलात् धर्मान्तरित बंधुओं के वंशजों को लेने के प्रश्न पर आत्म हत्या करने की भीधमकी दे डाली और उनकी वापसी असंभव बना दी और हमारे इस धर्मनिरपेक्ष शासन को तो देखो जो मुस्लिम शासकों के इन कुकृत्यों को छिपाना ओर झुठलाना एक राष्ट्रीय कर्तव्य समझते है ।

राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में विश्नोई संप्रदाय के अने क परिवार रहते है। इस सम्प्रदाय के लोगों की धार्मिक प्रतिबद्धता है कि हरे वृक्ष न काअे जाए और किसी भी जीवधारी का वध न किया जाए । राजस्थान में इस प्रकार की अनेक घटनाएँ हैं , जब एक एक वृक्ष को काटने से बचाने के लिए पूरा परिवार बलिदान हो यगा । सऊदी अरब के कुछ विशिष्ट आगन्तुकों को ग्रेट बस्टर्ड नामक पक्षी का राजस्थान में शिकार करने की जब भारत सरकार द्वारा अनुमति दी गयी तो इन विश्नोइयों के तीव्र विरोध के कारण यह प्रोग्राम रद्द हो गया । वह विश्नोई समप्रदाय के प्रवर्तक संत जाम्भी जी समाधि पर बनी छतरी मुस्लम काल में लोधी मुस्लिम सुल्तानों द्वारा अधिकार कर लिया गया था । अकबर जैसे उदार बादशाह से जब फरियाद की गयी तो उसने भी इन पाँच शर्तों पर यह छतरी विश्नोई सम्प्रदाय को वापिस की :–

1. मुर्दा गाड़ो,
2. चोटी न रखो,
3. जनेऊ धारण न करो,
4. दाढ़ी रखो,
5. विष्णु का नाम लेते समय बिस्मिल्लाह बोलो ।

विश्नाइयों ने मजबूरी की दशामें यह सब स्वीकार कर लिया । धीरे धीरे जैसा कि अकबर को अभीष्ट था, विश्नोई दो तीन सौ वर्ष में मुसलमान अधिक, हिन्दू कम दिखाई देने लगे । हिन्दुओं के लिए वह अछूत हो गए । परन्तु उन्होंनं अपनी मजबूरी को भुलाया नहीं आर्य समाज के जन्म के तुरत बद ही उन्होने उसे अपना लिया । बिजनौर जनपद के मौहम्मद पुर देवमल ग्राम के शेख परिवार और नगीना के विश्नोई सराय के विश्नो ई इसके उदाहरण हैं ।

संदर्भ

अध्याय 1 से तीन तक

1. एम मुजीब : इंडियन मुस्लम पृ. 67–68 के. एस. लाल, इंडियन मुस्लिम व्यू आर दे, पृ. 22

1क. एडवर्ड मार्टिमर : फेद एंड पावर पृष्ठ 196

2. अब्दुल रहमान अज्जम : दी इटरनल मेसेज ऑफ मौहम्मद, पृ.65

3. डॉ. हर्ष नारायण : जिजिया पृ 4

4. जॉन एल. एसपासिटो : वायसेज ऑफ रिसर्जेन्ट इस्लाम, पृ. 82

5. मौदूदी : सबसे पहला दस्तूर जमायते इस्लामी (1941) मु. बि. ला. – 11 पृ. 58

6. सही मुस्लिम, 4363, तथा डॉ. हर्ष नारायण, जिजिया, पृ. ।

7. सैययद अथर अब्बास रिजवी : दी हिस्ट्री ऑफ सूफिज्म इन इंडिया, खण्ड 2 पृ. 425

8. एस. आर. शर्मा : द क्रीसेट इन इण्डिया – पृ. 32

9. उपरोक्त

10. उपरोक्त
11. उपरोक्त
12. उपरोक्त
13. इलियट एंड डाउसन , खण्ड – 1 ए , पृ. 88
14. के. एस. लाल : द लीगेसी ऑफ मुस्लिम ऊल इन इंडिया , पृ. 70
15. सैययद अबुल हसन अली नदवी (अली मियाँ) कैलेमिटी ऑफ लिग्युइस्टिक एंड अल्चरल शाविनिज्म , पृ. 10 16. पायनियर, नखनऊ
17. मुशीरुल हक : इस्लाम इन सैक्युलर इंडिया, पृ 29

अध्याय 4
1. इलियट एंड डाउसन , खण्ड – 1 , पृ. 164
2. उपरोक्त
3. उपरोक्त पृ. 180– 182
4. उपरोक्त पृ. 122
5. उपरोक्त पृ 205
6. इलियट एंड डाउसन , खण्ड – 2 , पृ. 22
7. उपरोक्त पृ 24–25
8. उपरोक्त पृ. 261
9. के. एस. लाल : इण्डियन मुस्लिम : व्हू आर दे, पृ0 6
10. उपरोक्त
11. जकरिया अल काजवीनी. के. एस. लाल , उपरोक्त पृ0 7
12. ईलियट एंड डाउसन, खंड–2 पृ 49 , के एस लाल, पूर्वोद्धृत पृ. 7–8
13. के एस लाल, पूर्वोद्धृत पृ. 7–8
14. प्रो एस आर शर्मा, द क्रीसेंट इन इंडिया, पृ43
15. इलियट एण्ड डाउसन : खण्ड 2 पृ. 43
16. उपरोक्त पृ 37
17. उपरोक्त पृ 39
18. उपरोक्त पृ 40–41

19. उपरोक्त पृ 47
20. उपरोक्त पृ 49–50
21. के एस लालः इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे पृ 7
21. प्रो एस आर शर्मा : द क्रीसेंट इन इंडिया पृ 47
22. ईलियट एंड डाउसन खण्ड 2 पृ 35
23. उपरोक्त पृ 212
24. उपरोक्त पृ 215
25. के एस लाल : इंडियन मुस्लिम्स व्हू आर दे पृ 11
26. उपरोक्त पृ 23
27. ईलियट एण्ड डाउसन, खंड 2 पृ. 216–217
28. उपरोक्त पृ 219
29. फरिश्ता प्रथम पृ 72, के एस लाल : पूर्वाद्धृत पृ 11
30. के एस लाल, पूर्वोद्धृत पृ 11
31. ईलियट एंड डाउसन, खण्ड 2, पृ 223
32. उपरोक्त पृ 230
33. उपरोक्त पृ 231
34. के एस लाल पूर्वोद्धृत पृ 11
35. उपरोक्त पृ 23
36. उपरोक्त पृ 338 : 239
37. सीताराम गोयल : स्टोरी आफ इस्लामिक इम्पीरियलिस्म इन इंडिया में बदायुनी की मुन्तखाबात ।
38. के एस लाल : पूर्वोद्धृत पृ 23
39. उपरोक्त पृ 23–24
40. के एस लाल : इंडियन मुस्लिम्स व्हू आर दे पृ. 119
41. के एस लालः उपरोक्त पृ 35
42. बदायुनी : सीताराम गोयल स्टोरी ऑफ इस्लामिक इम्पीरियलिस्म इन इंडिया में उद्धृत पृ 46
43. उपरोक्त

44. उपरोक्त
45. ईलियट एंड डाउसन, खण्ड 3, पृ 140
46. एम आर बेग मुस्लिम, डिलेमा इन इंडिया, पृ 13
47. अब्दुल्लाह वसाफः तारीखे वसाफ, खण्ड 3 , पृ 42 (सीताराम गोयल : द कलकत्ता कुरान पैटिशन में उद्धृत)
48. अब्दुल्लाह वसाफ : पूर्वोद्धृत, पृ 43
49. उपरोक्त
50. उपरोक्त
51. उपरोक्त पृ 77
52. के एस लाल : इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे, पृ 24
53. उपरोक्त
54. उपरोक्त पृ 20–21
55. उपरोक्त पृ 50
56. उपरोक्त
57. उपरोक्त
58. उपरोक्त पृ 22
59. उपरोक्त पृ 33
60. उपरोक्त पृ 35
61. उपरोक्त
62. उपरोक्त पृ 22
63. सीराते फीरोजशाही : सीताराम गोयल द्वारा उपरोक्त में उद्धृत पृ 47
64. के एस लाल, इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे पृ 22
65. उपरोक्त
66. के एस लाल : इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे पृ 91
67. कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया भाग 3 पृ. 379–76, के एस लाल द्वारा इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे पृ 83 पर उद्धृत
68. के एस लाल : उपरोक्त पृ 82
69. उपरोक्त

70. उपरोक्त पृ 83
71. उपरोक्त
72. उपरोक्त
73. उपरोक्त, पृ 54
73क. उपरोक्त, पृ 58
74. उपरोक्त
75. उपरोक्त पृ 63
76. सीता राम गोयल द्वारा **स्टोरी आफ इस्लामिक इम्पीरियलिस्म इन इंडिया** में उद्धृत पृ 48
77. उपरोक्त
78. उपरोक्त पृ 49–50
79. एम आर बेग : पूर्वोद्धृत पृ 13
80. सीता राम गोयल : पूर्वोद्धृत पृ 53
81. उपरोक्त
82. उपरोक्त
83. उपरोक्त
84. कल्हण : राजतरंगिणी
85. के एस लाल द लीगेसी ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया पृ 233
86. सीता राम गोयल : पूर्वोद्धृत पृ 55
87. एस आर शर्मा : द क्रीसेंट इन इंडिया, पृ 201
88. सर सैय्यद अहमद : अथारुए सनादाद
89. सीता राम गोयल : पूर्वोद्धृत पृ 55
श्यामल दास : वीर विनोद भाग 1 पृ 82
90. वीर विनोद
90क. के एस लाल : द मुगल हरम पृ 141
91. बीवरिज : तुजुके जहांगीरी भाग 2 , पृ 233
92. काजबीनी : बादशाहनामा : ईलियट एण्ड डाउसन हिस्ट्री ऑफ इंडिया बाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स, भाग 7 , 39–40

93. श्यामल दास : वीर विनोद, भाग 2 , पृ 832–833
94. डॉ के एस लाल : इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे पृ 77
95. उपरोक्त
96. उपरोक्त पृ 77–78
97. के एस लाल : इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे पृ 80
97क. उपरोक्त पृ 82
97ख. उपरोक्त
98.के एस लाल : इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे पृ 79
99. उपरोक्त
100. उपरोक्त 80
101. सर जदुनाथ सरकार : हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब भाग 3 पृ 188
102. के एस लाल : द लीगेसी ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया पृ 227
103. सर जदुनाथ सरकार : पूर्वोद्धृत पृ 186
104. उपरोक्त पृ 185–186
105. उपरोक्त पृ 186
106. उपरोक्त पृ 187
107. सीताराम गोयल : पूर्वोद्धृत पृ 89
108. उपरोक्त
109. सर जदुनाथ सरकार : हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब, भाग 3 पृ 187
110. उपरोक्त पृ 188
111. उपरोक्त
112. उपरोक्त
113. के एस लाल : इंडियन मुस्लिम व्हू आर दे पृ 91